Scanned by CamScanner

गुरुधाम दिल्ली में

पूज्य गुरुदेव का निवास

पूज्य गुरुदेव गुरुधाम दिल्ली में महीने में कुछ दिन अवश्य ही निवास करते हैं, यह उनकी कृपा है और उनके भक्त, शिष्य उनका आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं।

पूज्य गुरुदेव जब भी दिल्ली निवास करेंगे तब शिष्यों, साधकों और आगन्तुकों से मिलने का समय प्रात. ९ बजे से १२ बजे तक का रहेगा। यदि ज्योतिष सम्बन्धी हस्तरेखा सम्बन्धी अथवा किसी विशेष समस्या सम्बन्धी कार्यों के समाधान हेतु मिलना है तो आप इस निश्चित समय के दौरान भेंट कर सकते हैं।

इसके लिए पहले फोन कर गुरुदेव के दिल्ली आगमन की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें।

विशेष कार्यक्रम

गुरुवार : १९ नवम्बर १९९२ — स्वर्णावती अप्सरा साधना
गुरुवार : २६ नवम्बर १९९२ — राजराजेश्वरी महालक्ष्मी साधना
गुरुवार : ३ दिसम्बर १९९२ — कुण्डलिनी चक्र जागरण साधना

उपरोक्त तीनों कार्यक्रम गुरुधाम दिल्ली में नीचे लिखे स्थान पर सम्पन्न होंगे, जो साधक इन साधना प्रयोगों में भाग लेना चाहते हैं वे पूर्व सूचना गुरुधाम दिल्ली अवश्य दे दें, जिससे उनका स्थान आरक्षित किया जा सके।

दीक्षा कार्यक्रम

जो साधक भाई परमपूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त कर उनके शिष्यत्व का अमृत-पान करना चाहते हैं, वे गुरुधाम—३०६, कोहाट एन्क्लेव दिल्ली, फोन नं०-७१८२२४८ से सम्पर्क करें और ध्यान रहे कि दीक्षा हेतु छः वस्तुएं आवश्यक हैं—१-धोती, २-आसन, ३-गुरु रहस्य सिद्धि माला, ४-गुरु चित्र, ५-पंचपात्र, ६-गुरु मन्त्र दुपट्टा।

—: पता :—

अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४
फोन : ७१८२२४८

आप और आपकी अपनी

पत्रिका

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

★ जिसका जनवरी ९३ के विशेषांक की रूपरेखा साथ लगे प्रपत्र में आप पढ़ ही रहे हैं।

★ इस भीड़ भाड़, कोलाहल, धक्के मुक्की और आपाधापी में अकेली ऐसी पत्रिका, जो आपको शान्ति, ज्ञान और गुरुदेव की समीपता प्रदान करने में समर्थ है।

★ और फिर ढेर सारे उपहार, प्रपत्र में प्रकाशित विवरण के अनुसार –पत्रिका का अंक प्रकाशित है और आपके हाथों में आने के लिए मचल रहा है।

★ यदि आप अभी तक सन् ९३ का पत्रिका शुल्क नहीं भेजा है, तो प्रपत्र में प्रकाशित "सदस्यता प्रपत्र" भर कर भेज दीजिये, वी०पी० द्वारा पत्रिका भेज दी जायेगी और आपको सन् ९३ का सदस्य बना दिया जायेगा।

★ यदि आप पत्रिका शुल्क भेज चुके हैं तो नीचे दिया हुआ प्रपत्र भरकर अपने मित्र को पत्रिका सदस्य बना दीजिये और उपहार में आप प्राप्त कीजिये—सर्वथा मुफ्त में

स्वर्णदेहा अप्सरा सिद्धि यन्त्र

एवं निश्चित सिद्धि के लिए गोपनीय जानकारी।

-------------यहां से काटिये-------------

पत्रिका सदस्यता संख्या..............................

मैं सन् १९९३ का पत्रिका सदस्य हूं, कृपया मुझे १५०)रु० वार्षिक शुल्क तथा वी०पी० व्यय जोड़ कर उपरोक्त दुर्लभ यन्त्र मुझे वी०पी० से भेज दें—

मेरा नाम..............................

मेरा पूरा पता..............................

....

....

वी०पी० छूटने पर मेरे निम्न मित्र को सन् ९३ के लिए पत्रिका सदस्य बना कर उसकी रसीद मुझे भेज दें, व उसे वर्ष भर पत्रिका भेजते रहें—

मेरे मित्र का नाम..............................

उसका पूरा पता..............................

....

....

वर्ष–१२

अंक–११

नवम्बर-१९९२

✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲

ः सम्पर्क ः

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर–३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ त्वमा वह वहै वद वै गुरोर्चन धरै सह प्रियन्हर्षेतुः ।।

हे गुरुदेव ! आप सर्वज्ञ हैं, हम ईश्वर को नहीं पहिचानते, उन्हें नहीं देखा है, पर आपको देखा है, और आपके द्वारा ही उस प्रभु या इष्ट के दर्शन सहज संभव है, मैं अपना हृदय समर्पित कर आपका अर्चन पूजन कर पूर्णता प्राप्त करने का आकांक्षी हूं ।

समाचार एवं सूचनाएं

सर्वप्रथम तो पत्रिका परिवार के कार्यालय सदस्यों द्वारा आप सभी शिष्यों को दीपावली की हार्दिक शुभ कामनाएं। महारात्रि की लक्ष्मी साधना का यह श्रेष्ठतम् अवसर पूर्ण जगमग ज्योति के साथ आपके घर को और उसके साथ जीवन में भी नया आलोक प्रकाश प्रदायक हो, यही हम सर्व शक्तिमयी आद्या मां भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना करते हैं। हमारे आपसी सम्बन्धों में और अधिक प्रगाढ़ता आये। हम आपको सहयोग देने योग्य बन सकें, और आपकी समस्त कामनाएं पूर्ण हों, यही हमारी कामना है।

सितम्बर तथा अक्टूबर मास में विशेष आयोजनों में शारदीय नवरात्रि का सिद्धेश्वरी महोत्सव, धनत्रयोदशी को दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में कुबेर, गणपति, लक्ष्मी प्रयोग तथा दीपावली पर्व के अवसर पर भगवती लक्ष्मी की साधना के साथ ही कुबेर महायज्ञ और स्वर्णदेहा अप्सरा सिद्धि प्रयोग आदि विशेष उल्लेखनीय रहे, इन आयोजनों में भाग लेने वाले प्रत्येक साधक-साधिकाओं के जीवन के ये स्वर्णिम अवसर चिरस्मरणीय रहेंगे।

सिद्धाश्रम के सोपान—गोल्डन कार्ड होल्डर मेम्बर

पत्रिका परिवार और आप सभी शिष्यों की ओर से मैं उन सभी "गोल्डन कार्ड होल्डर" सदस्यों को धन्यवाद देना चाहूंगा कि जिन्होंने गुरुदेव के एक ही आह्वान पर आगे बढ़ कर यह दिव्य गुरु प्रसाद गोल्डन कार्ड प्राप्त किया है, आज इन सदस्यों ने एक बीज बोया है, विशाल संस्था के निर्माण के लिए, विस्तार के लिए और आने वाले वर्षों में गुरुदेव की छत्र छाया में जो विशाल वट वृक्ष के रूप में उभरेगा तो उसकी छाया तले लाखों-लाखों साधकों को जीवन का नया आयाम प्राप्त होगा। **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के पटल पर उनका नाम स्वर्णांकित हो गया है।

जैसा कि पिछले अंक में सदस्यों के अनुरोध पर पूज्य गुरुदेव ने स्वीकृति दे दी थी कि अब जो साधक **सिद्धाश्रम साधक परिवार गोल्डन कार्ड योजना** हेतु ३१०००/-रुपये जमा करायेगा वही गोल्डन कार्ड मेम्बर बन सकेगा। दीपावली २५ अक्टूबर सन् १९९२ के बाद जो सदस्य यह धनराशि भेजें वे ३१०००/-रुपये ही भेजें।

इस मास जो मानस रत्न गोल्डन कार्ड होल्डर मेम्बर बन कर गुरुदेव के करकमलों से गोल्डन कार्ड प्राप्त करने के अधिकारी बन गये हैं उनकी सूची निम्नवत् है—

श्री अशोक पाण्डेय–जगदलपुर, श्री अशोक भाई एच जोशी–बलसाड़, श्री अपार सिंह–रुड़की, श्री बी.पी. दुबे–विदिशा, श्री चन्दा सिंह पहल-रोहतक, श्री धर्मवीर–बटाला, श्री हरगोपाल खुल्लर–नईदिल्ली, श्री कर्मदत्त शर्मा–मण्डी, श्रीमती कमला देवी वशिष्ठ-मण्डी, श्री के.बी. दुवे –बिलासपुर, श्री मयंक पाण्डेय–दिल्ली, श्री महेश चतुर्वेदी -जबलपुर, श्री पुष्कर सिंह विष्ट–अलमोड़ा, श्री पूर्णेश चौबे –(म०प्र०), श्री रोजन जेम्स–लुधियाना, श्री राज कुमार यादव–अम्बिकापुर, श्री सुधीर सूद–नई दिल्ली, श्री सुरेन्द्र कुमार निखिल–कुल्लू, श्री सेलरग्रीन नम्बरदार–उगाला, श्री शम्भू सिंह–लखनऊ, श्री संजय कुमार गुप्ता–हरिद्वार श्री सतीश चन्द्र-दिल्ली, श्री सतनाम सिंह-होशियारपुर।

मारीशस में महायज्ञ

सिद्धाश्रम साधक परिवार केन्द्रीय समिति के ध्वज तले मारीशस आयोजन की चर्चा आप पिछले तीन महीनों से सुनते पढ़ते आ रहे थे, उसका कार्यक्रम पूर्ण रूप से निश्चित हो गया है। अभी शारदीय नवरात्रि दिल्ली में सिद्धाश्रम साधक परिवार की मारीशस शाखा—**मगव न**

श्री निखिलेश्वरानन्द सत्संग शाखा मारीशस के सचिव **श्री हरिनाथ रामटहल** दिल्ली आये थे और उन्होंने पूज्य गुरुदेव के समक्ष कार्यक्रम को शीघ्रातिशीघ्र स्वीकृति प्रदान करने की अनुमति चाही, उन्होंने कहा कि मारीशस की जनता आपके दर्शनों, प्रवचनों के लिए व्याकुल है, और जैसा आयोजन दिल्ली में सम्पन्न हुआ उससे भी भव्य आयोजन करने हेतु हम कृत संकल्प हैं।

पूज्य गुरुदेव ने स्वीकृति प्रदान कर दी है, और अब साधकों शिष्यों को मारीशस चलने की तैयारी करनी है।

कार्यक्रम

१८, १९, २० दिसम्बर सन् १९९२—निखिलेश्वरम्—रुद्र—महाकाली महायज्ञ।

यज्ञ स्थल

बेले-मेर फ्लेक्यू मारीशस।

यह स्थान मारीशस की राजधानी पोर्ट लुई से केवल २५ किलोमीटर दूर है और यज्ञ आयोजन हेतु व्यवस्थापकों ने ५०००० मीटर जमीन में पण्डाल यज्ञ मण्डप इत्यादि का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है, सभी साधकों के रहने की व्यवस्था इसी स्थान पर रखी गई है।

यज्ञ समिति केन्द्रीय कार्यालय

श्री हरिनाथ रामटहल, **केम्प पेचुरस निखिल निवास ग्रान्ड रीवर साउथ ईस्ट,** मारीशस (हिन्दमहासागर)।

विशेष सम्पर्क

श्री मन्दरूप बाबू, **फोन नं० : २३०-४१९२३६४**

इस महान् कार्यक्रम में मारीशस स्थित सिद्धाश्रम साधक परिवार के प्रधान **श्री निर्दोष सिंह लड़ाई** और उनके सहयोगी भी पूरा सहयोग प्रदान कर रहे हैं। दोनों संस्थाओं के सहयोग से यह कार्यक्रम मारीशस के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक साधनात्मक कार्यक्रम होगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है।

जैसा कि मारीशस संस्था ने कहा है कि भारत से इस यज्ञ में आने वाले सभी सदस्यों की रहने, भोजन, आवास और यज्ञ के बाद दो सप्ताह तक पूरे देश के दर्शनीय स्थानों के भ्रमण की निःशुल्क व्यवस्था अब अपने हाथ में लेते हैं, गुरुदेव के सभी शिष्यों से हमारा निवेदन है कि वे कष्ट कर टिकट मात्र का खर्चा कर यहां मारीशस पहुंच जाएं, बाकी सब व्यवस्था हम कर लेंगे।

अतः इस योजना के अनुसार जो सदस्य मारीशस इस महायज्ञ में चलना चाहते हैं वे एक दिसम्बर तक अपना पासपोर्ट अवश्य बनवा लें तथा पासपोर्ट में यह अवश्य लिखवा दें कि "**इमीग्रेशन नोट रिकवाई**"। जहां तक किराया का प्रश्न है, हवाई जहाज द्वारा एक तरफ का भाड़ा १३०००)रु० है और इस यात्रा में छः घण्टे लगते हैं, तथा पानी के जहाज से यात्रा का भाड़ा ९०००)रुपये है। इस प्रकार तो एक-एक सदस्य के लिए यात्रा बहुत मंहगी पड़ जायेगी, इस कारण संस्था ने मारीशस अधिकारियों से और यहां के ट्रेवलिंग एजेन्सियों से बातचीत कर "ग्रुप योजना" को स्वीकृत करा दिया गया है इसलिए अब यात्रा शुल्क इस प्रकार से होगा—

हवाई जहाज द्वारा आने जाने का भाड़ा-१३९११)रु०

पानी के जहाज　,,　,,　,,　७२६०)रु०

जो साधक, शिष्य मारीशस चलना चाहते हैं, वे यह सूचना पाते ही अपना पासपोर्ट बनवा कर उसकी फोटो कापी जोधपुर भेज दें, साथ ही किराये की धनराशि ड्राफ्ट अथवा कैश द्वारा केन्द्रीय कार्यालय जोधपुर भेज दें, साथ में पत्र विस्तार से लिखें कि आप किस माध्यम से अर्थात् पानी के जहाज या हवाई जहाज से यात्रा करना चाहेंगे।

जीवन में सुअवसर जब भी आते हैं उसका लाभ अवश्य उठा लेना चाहिए। केवल किराये मात्र पर विदेश यात्रा का यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है तो आपको अवश्य ही इस महायज्ञ के अवसर पर मारीशस की यात्रा करनी चाहिए। ●

आपका आने वाला जीवन मंगलमय हो

और यह तभी संभव है

जब आप अपनी समस्याए पहिचानें

और उसका समाधान करें

और इस समाधान में हम आपके साथ हैं

१— क्या आप मानसिक तनाव से ग्रस्त एवं परेशान हैं ?

२— क्या आपके घर में या परिवार के सदस्यों को कोई न कोई बीमारी बनी ही रहती है ?

३— क्या आप पति-पत्नी में मतभेद है ?

४— क्या विवाह के काफी वर्ष बाद भी सन्तान नहीं हुई है ?

५— क्या आप पर काफी कर्ज हो गया है ?

६— क्या व्यापार-व्यवसाय ठीक प्रकार से नहीं चल रहा है ?

७— क्या अभी तक आपका स्वयं का मकान नहीं बना है ?

८— क्या आपके जीवन में अकारण शत्रु बन रहे हैं, जो आपको परेशान कर रहे हैं ?

९— क्या मुकदमेबाजी से आप परेशान हैं ?

१०— क्या आपके जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत होने के बावजूद भी भाग्योदय नहीं हुआ है ?

यदि उपरोक्त दस बिन्दुओं में से

'कोई भी बिन्दु आपके जीवन में घटित हो रहा है

तो इसके समाधान के लिए हम आपके साथ हैं, आपके लिए सहायक हैं—

सर्वोन्नति अनुष्ठान द्वारा

अनुमानित व्यय तीन हजार रुपये

पर आपके लिए सर्वथा मुफ्त

नियम——

१– नीचे दिये हुए प्रपत्र को भरिये तथा पीछे दिये हुए बिन्दुओं में से जो बिन्दु आपके जीवन में घटित है, उस पर गोल घेरा बना लीजिये ।

२– हम योग्य पण्डित से आपके लिए अनुष्ठान सम्पन्न कराकर सम्बन्धित यन्त्र आपको ४५०) रुपये एवं डाक व्यय के साथ भेज देंगे, ये साढ़े चार सौ रुपये अगले तीन वर्षों का पत्रिका शुल्क है ।

३– यदि आप पत्रिका सदस्य हैं तो किन्हीं तीन सदस्यों को पत्रिका सदस्य बना दें, या किसी एक को तीन वर्षों के लिए पत्रिका सदस्य बना दें ।

४– और ऐसा करने पर आपको उपरोक्त यन्त्र सर्वथा मुफ्त में ही प्राप्त हो जायेगा ।

---------------------------यहां से काटिये---------------------------

पत्रिका सदस्य इन्हें बनाइये——

१—नाम ....

पूरा पता ....

....

२—नाम ....

पूरा पता ....

....

३—नाम ....

पूरा पता ....

....

और उपरोक्त दुर्लभ अद्वितीय महत्वपूर्ण यन्त्र मुझे साढ़े चार सौ रुपयों की वी.पी. से भेज दें—

पत्रिका सदस्यता संख्या..............................

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

कलियुग में सर्वाधिक प्रभावशाली तन्त्र

महामृत्युंजय विधान

महामृत्युंजय विधान शिव का क्रान्तिकारी, आश्वर्यजनक, अमोघ और अद्वितीय मन्त्र प्रयोग है जिसके माध्यम से बीमारियों, शिशु रोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं विदेशों में भी महामृत्युंजय की चर्चा रही है, प्रत्येक बालक रोगी या अकाल मृत्यु से भयभीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त महामृत्युंजय यन्त्र धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है —

महामृत्युंजय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है, जिसके जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए महामृत्युंजय प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युंजय मन्त्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं, जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें। अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान आवश्यक है, अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं-लघु अनुष्ठान, चौबीस हजार मन्त्र जप का होता है, और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है, मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का होता है, जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं, तथा महा पुरश्चरण या महाअनुष्ठान चौबीस लाख मन्त्र जप का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन २७ माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में ६६ माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए-

१—अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देख कर प्रारम्भ करना चाहिए।

२–अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शिव का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भी स्थापना करनी चाहिए।

३–जहां जप करें वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मन्त्र जप करना चाहिए।

४–जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।

५–इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।

६–शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मन्त्र का ११०० जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए ११००० मन्त्र जप तथा पुत्र प्राप्ति उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए एक लाख मन्त्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मन्त्र शक्ति और अनुष्ठान से रोग निवारण तथा मृत्यु भय को दूर करने, अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने तथा रोगों को शमन करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युंजय साधना का स्थान सर्वोच्च है, हजारों लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करे तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इस साधना में मूल मन्त्र का जप करना ही महत्वपूर्ण है, अन्य विधि-विधानों में जाने की जरूरत नहीं होती।

प्रयोग विधि

किसी भी सोमवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने **"त्र्यम्बक पूजा यन्त्र"** स्थापित कर दें, पास में ही भगवान शिव का चित्र या मूर्ति स्थापित कर दें, दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, तत्पश्चात् विनियोग करें–

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार बोलें—

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठ ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीज महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

फिर दोनों हाथ जोड़ कर भगवान् शंकर का ध्यान करें—

हस्ताभ्यां कलशद्वयैमृतसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटै कैलाशकान्तं शिवं,
स्वैच्छाभ्यौजगतं नरेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे॥

मन्त्र जप

ध्यान के बाद महामृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए, मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार से है—

ॐ ह्रौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं ह्रौं ॐ॥

इस प्रकार निश्चित परिणाम के अनुसार मन्त्र जप करने पर साधक को अवश्य ही सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, कलियुग में यह विशेष प्रभावयुक्त मन्त्र है, जिसका उपयोग प्रत्येक साधक को करना चाहिए। ●

श्री विद्या तंत्र

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महासाधना

त्रिपुर सुन्दरी का स्थान दस महाविद्याओं में सबसे मुख्य है, क्योंकि यह शान्त स्वरूप और उग्र स्वरूप दोनों की ही साधना है। जीवन में काम, सौभाग्य, शरीर सुख के साथ-साथ वशीकरण, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि की भी यही साधना है। वास्तव में त्रिपुर सुन्दरी को तो राज-राजेश्वरी ही कहा गया है, क्योंकि यह अपनी कृपा से साधारण व्यक्ति को भी राजा बनाने में समर्थ है।

वैसे तो इस साधना के सहस्र स्वरूप हैं, क्योंकि इसका नाम ही "सहस्र रूपिणी" है और प्रत्येक स्वरूप की साधना अलग-अलग रूप में की जाती है। प्रस्तुत पंक्तियों में इस साधना के प्रमुख तथ्यों को ध्यान में रख कर एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है—

विश्वामित्र एवं वशिष्ठ का विवाद तो शास्त्रों में विस्तार से लिखा है, उस विवाद के अन्तर्गत आखिर एक दिन क्षत्रिय विश्वामित्र ने जो कि विभिन्न साधनाएं एवं सिद्धियां प्राप्त कर राजर्षि विश्वामित्र कहलाने लग गये थे, उन्होंने वशिष्ठ से पूछा कि ऐसी कौन सी साधना है जिसको सम्पन्न करने से मैं ब्रह्मर्षि बन सकता हूं और जगत में मेरा नाम आपके बराबर हो सकता है वशिष्ठ ने कहा कि हे राजर्षि विश्वामित्र ! जीवन में पूर्णता के लिए दस प्रकार की सिद्धियां आवश्यक हैं, ये सिद्धियां हैं—

१-अणिमा सिद्धि, २-लघिमा सिद्धि, ३-महिमा सिद्धि, ४-ईशित्व सिद्धि, ५-वशित्व सिद्धि, ६-प्राकाम्य सिद्धि, ७-भक्ति सिद्धि, ८-इच्छा सिद्धि, ९-प्राप्ति सिद्धि, १०-सर्वकाम सिद्धि।

ये दस सिद्धियां आपके प्राप्त करनी आवश्यक हैं, और इसका एक ही उपाय है कि आप राजराजेश्वरी त्रिपुर

सुन्दरी की कृपा से ये सिद्धियां प्राप्त कर लेने से आपके जीवन में पूर्णता आ जायेगी और इतिहास गवाह है कि विश्वामित्र ने अन्ततः त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न कर ब्रह्मर्षि पद प्राप्त कर ही लिया।

अपनी हिमालय यात्रा के दौरान पूज्य गुरुदेव जब अपने गुरु श्री सच्चिदानन्द जी महाराज के पास पहुंचे तो उन्होंने अपने इस शिष्य को दीक्षा देने के पश्चात् बोले कि निखिल! तुमने स्थान-स्थान पर यात्रा कर ज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त कर कई तरह की सिद्धियां प्राप्त कर ली है, लेकिन इन सिद्धियों के कारण तुम यह मत समझ लेना कि बहुत कुछ हो गया है, अभी तो बहुत कुछ बाकी है, तुम्हें यदि अष्टादश सिद्धियां प्राप्त करनी हैं तो विराट शक्ति स्वरूप श्रीचक्र स्थित त्रिपुर सुन्दरी की साधना सम्पन्न करनी ही पड़ेगी, और जब यह साधना सम्पन्न हो जायेगी तो तुम्हें अन्य साधनाएं बच्चों के खेल जैसी लगेंगी, इसलिए मेरे मानसपुत्र मैं तुम्हें सबसे पहले राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न कराऊंगा, जिससे इस कलयुग में संसार को तुम कुछ दे सकोगे, क्योंकि लक्ष्मी पति और राजा तो कई होते हैं, आते हैं और चले जाते हैं, उन्हें उनके जीवन काल में ही लोग याद करते हैं, लेकिन जो संसार का कल्याण करने की इच्छा रखता है और जो कुछ देने की सामर्थ्य रखता है और संसार को ज्ञान का अमृत देता है और खुद कमलवत् निस्पृह तथा सामान्य बना रहता है, वह चाहे विश्व के किसी कोने में हो, जगत् उसे हजारों-हजारों वर्षों तक याद रखता है, और तुम्हारा जन्म इसीलिए हुआ है, अतः मैं तुम्हें यह साधना सम्पूर्ण रूप से सम्पन्न कराऊंगा।
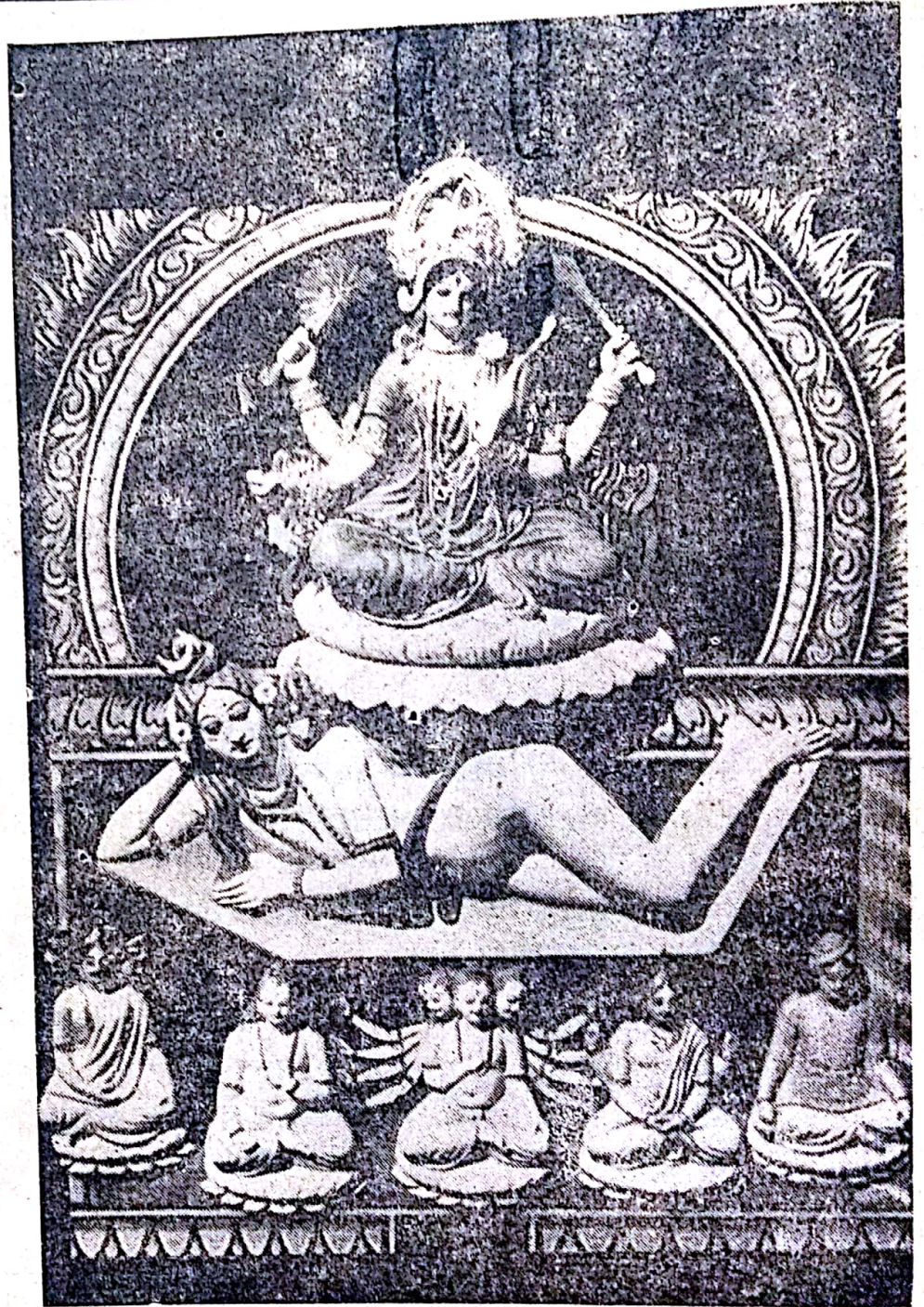
आज उसी विद्या का एक अध्याय जैसा श्रीगुरुमुख से

मुझे प्राप्त हुआ वह पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है—

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी सिद्ध विद्या साधना कही जाती है, क्योंकि इसके विभिन्न रूपों की विभिन्न काम्य सिद्धि के लिए साधना की जाती है, ज्ञान प्राप्ति अर्थात् सरस्वती वाक् सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि, विशेष वशीकरण सिद्धि, अनंग सुख सिद्धि, सर्व वांछित सिद्धि, मर्दन सिद्धि इत्यादि इसी साधना से सम्भव है, इन साधनाओं को एक-एक क्रम से करना चाहिए। जब राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी साधक पर प्रसन्न होती है तो उसे अपनी सिद्धियों में एक के बाद एक सफलता मिलने लग जाती है, क्योंकि हर सिद्धि दूसरी सिद्धि से जुड़ी है।

साधना कब करें

त्रिपुर सुन्दरी साधना चारों नवरात्रियों में बिना कोई मुहूर्त देखे सम्पन्न की जा सकती है. इसके अतिरिक्त चन्द्र ग्रहण का दिन भी साधना प्रारम्भ करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्ध मुहूर्त है, इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से भी साधना प्रारम्भ की जा सकती है और सबसे अन्त में ये जान लेना आवश्यक है कि सबसे सिद्ध मुहूर्त वही होता है, जब सद्‌गुरुदेव अपने शिष्य को साधना प्रारम्भ करने को कहते हैं।

निकट भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मुहूर्त ९ दिसम्बर सन् १९९२ को आ रहा है. क्योंकि इस दिन चन्द्र ग्रहण है तथा मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा समाप्त हो कर पौष मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा प्रारम्भ होती है और विशेष बात देखिये कि इस दिन योग भी **'सिद्ध योग'** है और रोहिणी नक्षत्र अपने चतुर्थ चरण में है तथा प्रतिपदा के दिन **'साध्य योग'** है, ऐसा सुन्दर योग बहुत कम बनता है, क्योंकि साधना तो सिद्धि और साध्य के लिए ही की जाती है और यही दोनों योग पड़ रहे हैं।

नौ दिन के साधना क्रम में साधक प्रत्येक दिन देवी के अलग-अलग स्वरूप का ध्यान कर अलग-अलग कार्य सिद्धि के लिए साधना करें तो यह उनके लिए उचित रहेगा। हां जो साधक किसी एक कार्य विशेष के लिए साधना करना चाहते हैं तो वे नौ दिनों तक इसी क्रम को दोहरा सकते हैं।

त्रिपुर सुन्दरी के ध्यान

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी का सबसे प्रमुख ध्यान तो सूर्य का तेज धारण किये हुए त्रिनेत्री जो कि कमल-दल पर आसीन है और रक्ताम्बर धारण किये हुए है। चारों हाथों में धनुष, पाश, मुसर धारण किये है, जो अपने पूर्ण स्वरूप में शिव के ऊपर विराजमान है और त्रिजगत की आधार शक्तियां सरस्वती, ब्रह्मा, कुबेर आसन के नीचे स्थित हैं। वह भगवती आधारभूता त्रिपुर सुन्दरी राज राजेश्वरी को स्मरण करने मात्र से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

इसके अतिरिक्त लक्ष्मी प्राप्ति, वाक् सिद्धि, ज्ञान प्राप्ति, आरोग्य सिद्धि, वशीकरण सिद्धि, काम सिद्धि आदि के अलग-अलग ध्यान आवश्यक हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

दोनों हाथों में बीजपूर तथा कमल धारण करने वाली, सुवर्ण के समान आभा वाली तथा पद्मासन पर विराजमान त्रिपुर सुन्दरी का लक्ष्मी प्राप्ति के लिए चिन्तन करता हूं।

ज्ञान प्राप्ति के लिए

चारों हाथों में—वरद मुद्रा, अमृत कलश, पुस्तक एवं अभय मुद्रा धारण करने वाली, अमृत की धारा फैलाने वाली त्रिपुर सुन्दरी का ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करता हूं।

आरोग्य के लिए

चारों हाथों में वरद मुद्रा आदि धारण करने वाली, श्वेत वस्त्र वाली, चन्द्रमा के समान आभा वाली तथा अकार से लेकर क्षकार तक समस्त वर्णों के अवयव वाली त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूं।

वशीकरण के लिए

दोनों हाथों में अंकुश एवं पाश धारण करने वाली रत्न एवं आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्नवदना एवं अरुण आभा वाली देवी त्रिपुर सुन्दर का ध्यान करता हूं।

काम सिद्धि—अनंग सिद्धि हेतु

कल्पवृक्ष के नीचे कान्तिमान रत्न सिंहासन पर विराजान मद से आघूर्णित नेत्र वाली चारों हाथों में क्रमशः बीजापूर, कपाल, धनुष बाण एवं अंकुश धारण करने वाली रक्तवर्णा त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूं।

साधना सामग्री

नौ दिनों की इस साधना महाकल्प के लिए नौ अलग-अलग सामग्री आवश्यक है और प्रत्येक सामग्री पूर्ण मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए। जिससे साधक उस सामग्री के प्रभाव को प्राप्त कर जो साधना करे, उसमें उसे सिद्धि अवश्य प्राप्त हो, इसके अतिरिक्त निम्न साधना सामग्री भी आवश्यक है, जिसकी व्यवस्था साधक अपने यहां स्वयं कर सकते हैं—१-आसन (किसी भी रंग का हो सकता है), २-जलपात्र, ३-गंगाजल यदि हो तो, ४-चांदी या स्टील की प्लेट, ५-कुंकुंम (रोली), ६-अक्षत, ७-केसर, ८-पुष्प, ९-बिल्व पत्र, १०-पुष्प माला, ११-दूध, दही, घी, चीनी, शहद अनुमान से, १२-नारियल, १३-रक्त सूत्र या मौली अथवा कलावा, १४-यज्ञोपवीत, १५-अबीर गुलाल, १६-अगरबत्ती, १७-कपूर, १८-घी का दीपक, १९-नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, २०-पांच फल, २१-इलायची।

इसके अतिरिक्त इस साधना में कुछ विशेष सामग्री की आवश्यकत रहती है, जो कि साधक को पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए, जिससे कि साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् किसी सामग्री के अभाव में उसकी साधना अधूरी न रहे।

१-अद्वितीय सर्वकामना सिद्धि युक्त **त्रिपुर सुन्दरी यन्त्र** जो कि चैतन्य एवं सिद्धि मन्त्र से सम्पूरित हो।

२-**स्वर्णावती यन्त्र** जो अखण्ड एवं अनायास धन प्राप्ति युक्त सिद्ध विग्रह हो।

३-**वरदायक गृहस्थ सुख यन्त्र** जो सभी प्रकार से पूर्ण गृहस्थ सुख में उपयोगी हो।

४-**मृत्युंजयी शिव रुद्राक्ष** जो अकाल मृत्यु निवारण एवं पूर्ण आयु प्रदान करने से सम्बन्धित मन्त्रों से सम्पूरित हो।

५-**नवदुर्गा त्रिभुवन मोहिनी माला** जो कि गले में पहिनने व मन्त्र जप के लिए और पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।

६-**कल्पवृक्ष साफल्य** जो प्रत्येक प्रकार की ईच्छा पूर्ति के लिए रावण कृत प्रयोग से सिद्ध हो।

७-अद्वितीय **त्रिपुर सुन्दरी पारद गुटिका** जो भगवती त्रिपुर सुन्दरी के प्रत्यक्ष दर्शन कराने में समर्थ हो।

८-ऋद्धि-सिद्धि युक्त दुर्लभ **तांत्रोक्त सियारसिंगी** जो जीवन के समस्त विघ्नों का नाश कर, पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।

९-**मनोवांछा सिद्धि यन्त्र** जो समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हो।

पत्रिका पाठकों की सुविधा हेतु तथा पूरे साधना काल में निर्विघ्न साधना सम्पन्न हो सके और प्रामाणिक व शुद्ध सामग्री प्राप्त हो सके, इस हेतु इन सभी सामग्रियों का एक पैकेट बना दिया गया है, जो कि केवल पत्रिका पाठकों को ही भेजे जाने की व्यवस्था है, यह मन्त्र सिद्ध, चैतन्य,

प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री सम्पूर्ण साधना के साथ साधक को साधना में अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने में समर्थ है।

पूजन विधान

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना में नौ दिन के इस अनुष्ठान में प्रथम दिन जो पूजन करें वह पूजन तो आने वाले आठ दिनों तक और करना ही है, विशेष कार्यों हेतु विशेष सामग्री के साथ उसका पूजन एवं मन्त्र जप करना है। किसी भी अनुष्ठान में सबसे पहले संकल्प लिया जाता है, तत्पश्चात् गणपति पूजन करना आवश्यक रहता है, और फिर त्रिपुर सुन्दरी ध्यान। इन तीनों के पश्चात् एक पात्र में सामग्री जमा लें और मध्य में **त्रिपुर सुन्दरी महायन्त्र** को स्थापित करें, अब अपने पास पुष्प लेकर सबसे पहले त्रिपुर सुन्दरी की विशेष अनंग शक्तियों का दो क्रम से पूजन करना है, प्रथम क्रम में यन्त्र के चारों ओर गोलाकार रूप में नौ पुष्प स्थापित करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

प्रथम क्रम—ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ कामिन्यै नमः, ॐ कामदायिन्यै नमः, ॐ रत्यै नमः, ॐ रतिप्रियायै नमः, ॐ नन्दायै नमः, ॐ मनोन्मन्यै नमः, ॐ इच्छायै नमः।

द्वितीय क्रम में—ॐ शुभगायै नमः, ॐ भगायै नमः, ॐ भगसर्पिण्यै नमः, ॐ भगमाल्यै नमः, ॐ अनंगनगायै नमः, ॐ अनंगमेखलायै नमः, ॐ अनंगमदनायै नमः।

अब यन्त्र को घी उसके पश्चात् दूध और फिर जल से धो कर उसे पुष्प के आसन पर विराजमान करना चाहिए, तत्पश्चात् भैरव पूजन सम्पन्न किया जाता है और यन्त्र के आठ दलों में कामरूप पीठ, मलय पीठ, कोल्लगिरि पीठ, चौहारा पीठ, कुलान्तक पीठ, जालन्धर पीठ, उड्डयान पीठ, कोट्ठ पीठ। इस प्रकार आठ पीठ पूजन की कल्पना की जाती है कि इन सभी पीठों की शक्तियां हमारे पूजन में सहायक हों।

प्रथम दिवस

इस दिन देवी पूजन प्रारम्भ करने के साथ ही दीपक जला देना चाहिए और सम्पूर्ण पूजन पूर्ण कर देवी के मूल मन्त्र की ११ माला का जप करना आवश्यक है।

त्रिपुर सुन्दरी महामन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ त्रिपुर सुन्दर्यै सर्व शक्ति समन्वित सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॥

यह मन्त्र जप **मोहिनी माला** से ही सम्पन्न किया जाना चाहिए।

अब अलग-अलग कार्यों के लिए किस प्रकार अलग-अलग सामग्री को प्रयोग में लानी है, यह ध्यान से देखें।

द्वितीय दिवस

इस दिन सर्वप्रथम त्रिपुर सुन्दरी का पूजन ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही सम्पन्न करना है उसके पश्चात् **स्वर्णावती यन्त्र** को त्रिपुर सुन्दरी यन्त्र के आगे स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करें इस दिन साधक लाल वस्त्र धारण करें तथा निम्न मन्त्र का जप करें—

स्क्लीं क्ष्म्यौं ऐं त्रिपुर सर्वं वांछितं देहि नमः स्वाहा ॥

तृतीय दिवस

गृहस्थ सुख यन्त्र का पूजन कर निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करें—

क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा ॥

चतुर्थ दिवस

मृत्युंजय शिव रुद्राक्ष का पूजन कर शिव का ध्यान करें, और शिव की महाशक्ति त्रिपुर सुन्दरी की आराधना में निम्न मन्त्र का जप करें—

ह्रीं ह्रीं ह्रीं महा त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं च देहि स्वाहा ॥
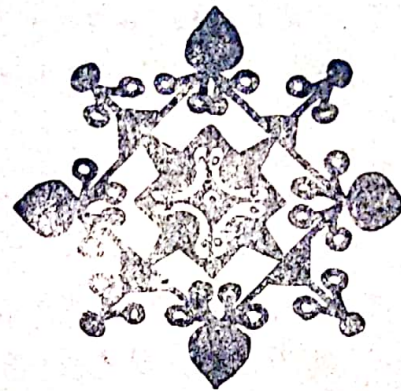
पंचम दिवस

तांत्रोक्त सियारसिंगी का पूजन कर निम्न मन्त्र का जप करें—

ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा ॥

षष्ठम दिवस

त्रिपुर सुन्दरी मनोवांछा यन्त्र का पूर्ण विधि से पूजन कर निम्न मन्त्र जप सम्पन्न करें—

क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ॥

सप्तम दिवस

इच्छा, कवित्व एवं वाक्सिद्धि के लिए **कल्पवृक्ष साफल्य** का पूजन कर देवी के विशेष स्वरूप का ध्यान कर निम्न मन्त्र का विशेष जप अवश्य करना चाहिए—

ह्रीं क्लीं ह्सौः सौः क्लीं ह्रीं ॥

अष्टम दिवस

इस दिन देवी के विशेष स्वरूप का ध्यान कर वशीकरण सिद्धि हेतु साधना सम्पन्न करनी है। इसलिए **त्रिपुर सुन्दरी पारद गुटिका** का विशेष पूजन सम्पन्न करें तथा निम्न मन्त्र का जितना अधिक जप कर सकें अवश्य करें—

क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर सुन्दरि सर्व जगत् मम वश कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा ॥

नवम् दिवस

आज साधना का पूर्णाहुति दिवस है, इस कारण अब जिन-जिन सामग्रियों का पूजन कर मन्त्र जप किया है, उनका प्रत्येक का पूजन कर ऊपर लिखे गये आठों मन्त्र ११-११ बार अवश्य बोलें, इस दिन नौ दीपक जलाएंगे, क्योंकि प्रथम दिन एक दीपक, दूसरे दिन दो, इसी प्रकार यह क्रम बढ़ेगा। सर्व सिद्धि के लिए आज साधना अनुष्ठान पूर्ण होता है, इस कारण देवी के आगे पुष्प का निरन्तर अर्पण करते हुए निम्न मन्त्र जप करें—

ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ॥

त्रिपुर सुन्दरी साधना को कुछ लोग केवल वशीकरण की ही साधना कहते हैं, जो कि उचित नहीं है, वास्तव में तो त्रिपुर सुन्दरी साधना से साधक जगत वशीकरण कर जीवन में उच्चता पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है, उसे अपने जीवन में धन-धान्य, पशु-धन, पुत्र-सुख, लाभ, कार्य वृद्धि, ऐश्वर्य वृद्धि, व्यापार वृद्धि, लक्ष्मी वृद्धि, सम्मान वृद्धि इत्यादि अपने आप आने लगते हैं।

इस अनुष्ठान के पश्चात् नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर दक्षिणा अवश्य प्रदान करनी चाहिए। ●

शिष्य योग

विवेक और वैराग्य ये दो गुण शिष्य बनने वाले साधक में होने चाहिए।

जो जिज्ञासु, मनुष्य क्या है, ईश्वर क्या है, योग भक्ति ज्ञान क्या है, जगत् किसे कहते हैं, इस प्रकार जिज्ञासा पूर्वक विचार करता है, वह ही भाग्यवान शिष्य है, शिष्य वह है, जो सर्वदा गुरु आज्ञा में संलग्न होकर अपने को उनमें खो देता है, श्रीगुरु के बताये हुए रास्ते पर जो निर्मलता से चलता है, वही भाग्यशाली शिष्य है, ऐसा ही शिष्य कालान्तर में गुरु बन जाता है, वस्तुतः भक्त वह है, जो भगवान से भिन्न न हो, योगी वह है, जो ध्यान से भिन्न न हो, राजा वह है जो प्रजा से भिन्न न हो, वैसे ही श्रीगुरु से जो भिन्न नहीं हो, वही यथार्थ में शिष्य है।

अर्जुन भगवान से कहता है—"करिष्ये वचनं तव" अर्थात् आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। इस प्रकार जो गुरु का कहना पूरा-पूरा मानता है, जो गुरु वचन में अपने को संलग्न कर रखता है, वही सत् शिष्य है, ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं— "गुरु वचनी मन धुलते" अर्थात् गुरु के उपदेश वचन से मन शुद्ध हो जाता है, ऐसे शिष्य का अधिकार बड़ा होता है, कालान्तर में उस परम शिष्य को गुरु पद प्राप्त होता है, व्यवहार कुशल, अभ्यासरत, जागरूक, कर्त्तव्यपरायण, गुरु वचन में पूर्ण निष्ठा रखने वाला ही श्रीगुरु का आदर्श शिष्य है, गुरु भक्ति पूर्ण शिष्य अपनी भक्ति तथा वैराग्य विवेक के बल से संसार बन्धन को तोड़ डालता है, मोह पाश को काट डालता है, विघ्न-जाल को जला देता है, वह न भ्रममय मरु नदी में बहता है, न दुःखाग्नि में तपता है, न किसी से डरता है, न किसी को डराता है।

शिष्यत्व बड़ा जटिल विषय है, शिष्य-रहस्य को जानना साधारण व्यक्ति के लिए असम्भव है, यदि साधक पूर्ण शुद्धता से शिष्यत्व प्राप्त कर ले, तो उसके समान जगत् में कौन है ? जगत् में गुरुजन बहुत मिलेंगे, परन्तु शिष्यत्व बड़ा दुर्लभ है।

जगत् में सद्भाष्य देने वाले, शीलवान बनाने वाले बहुत प्रकार के साधन-मार्ग ऋषि मुनियों द्वारा रचे हुए हैं —जप, तप, यज्ञ-याग, दान व्रत, तीर्थ यात्रा, सगुण-भक्ति निर्गुण उपासना आदि। सब सत्य, निर्दोष और फलने वाले हैं, फिर भी साधक के लिए शिष्य-योग अर्थात् शिष्यत्व स्वीकार करके सद्गुरु के बताये हुए पथ पर चलने का साधन सर्वथा श्रेष्ठ है, यह योग मार्ग जगत् में महान कहलाता है।

आधुनिक कुछ महात्मा लोग और तत्व ज्ञान के व्याख्याकार शिष्यत्व का खण्डन करते हैं, साथ-साथ गुरुत्व का भी लोप कर देते हैं, एक तो आप निरे भ्रम में राह चलते हैं-औरों को भी अपने पीछे घोर अरण्य में ले जाते हैं, अभिमानवश पढ़े पुस्तक—पंडित अनुभूतिहीन ज्ञानी, भक्ति रस हीन हृदय वाले शुष्क लोग परमार्थ के पथ-प्रदर्शक बनते हैं, कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने न किसी गुरु से योग की युक्ति जानी है, न ज्ञान को अनुभूति को पहचाना है, लेकिन स्वयं गुरुहीन होने के कारण गुरु से कुछ नहीं पाया है, वह दूसरे को क्या सिखा सकेगा ? जो स्वयं कंगाल है, वह क्या दान देगा ? जो बिल्कुल अनपढ़ है, वह क्या सिखा सकता है ? जो पूर्ण अन्ध है, वह कौन सी राह बतायेगा ? जिसने किसी गुरु से प्राप्त नहीं किया है, वह दूसरे को क्या दे सकेगा ? ऐसे ही कई लोग जगह-

जगह तत्व ज्ञान के विषय पर प्रवचन करते हैं, श्रोताजन का मार्गदर्शन करते हैं, और बड़ी विचित्र बात तो यह है कि गुरुत्व का खण्डन करते हैं।

शिष्यत्व ग्रहण करना यानी गुरु को स्वीकार करना समर्पण करना, यह एक बड़ा जटिल और रहस्यमय विषय है, शिष्य वह है जो ध्यान, ज्ञान, विज्ञान और प्रेम द्वारा श्रीगुरु का बन कर रहता है, जैसे बिन्दु सिन्धु में मिल कर सिन्धु बन जाता है, वैसे ही शिष्य शुद्ध भावना से अपने अन्तःकरण में गुरु के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, और थोड़े ही समय में उनके समान बन जाता है।

शास्त्रों ने दो प्रकार के पुत्र बताये हैं—एक वीर्यजात और दूसरा मन्त्रजात। 'जात' नाम पुत्र है, जो पिता के वीर्य से उत्पन्न होता है, वह वीर्यपुत्र है, और जो गुरु से शक्तिपात द्वारा मन्त्र से मन्त्रित किया जाता है, वह मन्त्र-जात पुत्र है। वस्तुतः मन्त्रजात ही सच्चा पुत्र है, श्रीगुरु अपने तेजोमय, तपोमय, योगमय और ज्ञानमय मन्त्र वीर्य को शिष्य में स्थापित करते हैं।

चितिमय महामन्त्रवीर्य शिष्य का एक अनोखा आश्चर्यमय योगाग्निमय शरीर बना कर उसे अपने जैसा ही अर्थात् श्रीगुरु जैसा ही बनाता है, तब शिष्य गुरुमय बन जाता है।

आजकल किसी-किसी के मन में एक प्रश्न उठता है, कि एक गुरु के सभी शिष्यों की प्रगति एक समान क्यों नहीं होती, सभी एक समान क्यों नहीं बनते? इसका कारण है शिष्यों का अधिकार भेद। एक ही गुरु से शक्ति प्राप्त शिष्यों में सब समान नहीं होते, इसी से किसी शिष्य में शक्ति का पूर्ण प्रभाव, किसी में अल्प प्रमुत्व दिखाई पड़ता है, और किसी का पतन भी हो जाता है, श्रीगुरु के रहन-सहन तथा व्यवहार में ऐसा क्यों? तैसा क्यों, इस प्रकार शंका संदेह करने से पूर्णत्व की प्राप्ति और गुरुत्व की सिद्धि में रुकावट हो जाती है, जो कोई गुरुजनों में दोष देखता है, तथा क्रोध, रोष आदि भावना करता है, वह कभी शिष्य हो ही नहीं सकता, जिसने अपने को पूर्ण-रूप से गुरुदेव को दे दिया, उसने गुरुदेव से सम्पूर्ण लिया, सब कुछ प्राप्त किया और वही शिष्य है, जिसने पूर्ण दिया उसने पूर्ण पाया, जिसने कुछ बचा रखा, थोड़ा कुछ छिपा रखा, उसने उतना ही कम पाया।

शिष्य में गुरु भक्ति होनी चाहिए। शिष्य, गुरु के प्रति जो प्रेम रखता है, वही भक्ति कहलाती है, भक्ति नाम प्रेम है। काया, वाचा, मनसा गुरु सेवा में रत हो जाना, गुरु आज्ञा का पूरा-पूरा पालन करना, गुरु स्मृति से विचलित न होना, गुरु सेवा के सिवा अन्य कुछ भी श्रीगुरु से न मांगना, अर्थात् कामना रहित प्रेम करना गुरु भक्ति है, ऐसा जो है वह शिष्य है, काया, वचन और मन से श्रीगुरु का जो आदर करता है और सेवा करता है और कुछ भी नहीं मांगता, उस पर सर्व देवता प्रसन्न होते हैं, सर्व मन्त्र फलीभूत होते हैं, सर्व सिद्धियां सहज ही प्राप्त होती हैं, ऐसा शिष्य चाहे गृहस्थ भी हो, तो गृहस्थ न तजते हुए बाल-बच्चों के बीच रह कर भी सहज में ही ईश्वर प्राप्ति करता है, और यदि त्यागी हो तो सुलभता से सर्वकाम-पूर्णकाम-निजात्म स्थिति को प्राप्त करता है।

ब्रह्मज्ञान-सम्पन्न, योगस्थिति-रत और शक्ति-पात-कुशल होने पर भी जो शिष्यत्व को अखण्ड रखकर अभेदमय बनकर भी भेदरहित भेद से श्रीगुरु की सेवा करने को तत्पर रहता है, वही शिष्य कह-लाता है।

अभेद प्राप्त गुरु शिष्य के बीच में ही एक अप्रतिम दिव्य आनन्द की रसमय नदी बहती है, जिसमें जगत् के असंख्य लोग स्नान करके पावन बनते हैं, पवित्र होते हैं। ●

—'परमार्थ प्रकाश' से

यदि रहना है जीवन में अपराजित

तो कीजिये

विष्णु अपराजिता महाविद्या साधना

अपराजिता का तात्पर्य है कि बुरी शक्तियों से पराजय न होना और विपरीत स्थितियों का मुकाबला कर उन्हें अनुकूल बना लेना। कहावत है कि समय बड़ा बलवान होता है और उसके हाथों सबको हार माननी पड़ती है, लेकिन जो समय पर हावी हो जाता है वही तो जीवन में सफल रहता है, परिस्थितियों के आगे धक्के खाता व्यक्ति अपने जीवन में इधर से उधर होता रहता है और उसे अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाता। अपराजित रहने का तात्पर्य है अपने आपको उस स्थिति तक बलवान बना देना कि शक्ति सिद्ध रूप में मूलाधार में आसीन हो जाय।

शक्ति समन्वित होना और शक्तिशाली होना कोई खराब बात नहीं है, इसमें कोई दोष भी नहीं है, उल्टे शक्तिहीन होना जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। दीन हीन होकर तो लाखों करोड़ों रहते हैं और उनको भिखारी ही कहा जाता है, और जो शक्ति सम्पन्न होते हैं वे दाता कहलाते हैं और यदि शक्ति शुद्ध रूप में आती है, साधना के बल से आती है तो उसका उपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए ही होता है। उस शक्ति का दुरुपयोग नहीं हो सकता, ऐसा साधक स्वयं अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण करने में समर्थ रहता है।

शक्ति सम्पन्न श्रीविष्णु

विष्णु की शक्ति मूल रूप से शिव की ही शक्ति है, क्योंकि शिव जगत् के कर्त्ता और हर्ता दोनों ही हैं। 'फलश्रुति' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जब देवता और असुरों का संग्राम हुआ तो देवताओं द्वारा अनुनय विनय करने पर विष्णु ने कहा कि यदि मुझे भगवान शिव द्वारा अपराजय का वरदान मिल जाय और अपराजय अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हो जाय तो मैं संग्राम के लिए तत्पर हूं, तब भगवान सदाशिव ने श्रीहरि विष्णु के कान में एक साधना-

त्मक उपदेश दिया और यह विशेष साधनात्मक ज्ञान विष्णु अपराजिता साधना के नाम से विख्यात हुआ। श्रीविष्णु द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने से वे जगत् में वन्दनीय हुए और देवताओं के देव के रूप में पूजनीय हुए।

इस साधना में विशेष नियम हैं, उनका पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। सर्वप्रथम तो जिस कार्य के लिए साधना की जानी है वह कार्य निश्चित कर लें और एक साथ सभी कार्यों के लिए साधना नहीं करें, इस साधना में साधक किस दिशा की ओर मुंह कर बैठें, यह महत्वपूर्ण है।

साधना नियम

१–यह साधना रात्रि में सम्पन्न की जाती है तो विशेष फलदायी रहती है।

२–साधक द्वारा पीला आसन और पीले ही वस्त्र धारण करने चाहिए।

३–पीले रंग के पुष्प तथा पीले रंग की गन्ध अर्थात् अबीर का ही पूजन में प्रयोग करें।

४–पूरे साधना काल के दौरान नित्य शिव मन्दिर में जाकर गुग्गल का धूप अवश्य जलाना चाहिए।

५–साधना काल के दौरान घी का दीपक जलते रहना चाहिए।

६–सबसे महत्वपूर्ण यह है कि वशीकरण सिद्धि हेतु पूर्व दिशा की ओर मुंह, मारण कार्य हेतु दक्षिण दिशा की ओर मुंह, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उत्तर दिशा की ओर मुंह और रोग नाश हेतु पश्चिम दिशा की ओर, और आकर्षण साधन कार्य हेतु वायव्य कोण दिशा की ओर, स्तम्भन साधना हेतु, ईशान कोण की ओर, भूत-प्रेत नाश हेतु नैर्ऋत्य कोण की ओर तथा सर्व कामना पूर्ति हेतु आग्नेय कोण की ओर मुंह करना चाहिए।

साधना सामग्री

इस साधना में सबसे विशेष बात यह है कि केवल दो सामग्री का ही विशेष महत्व है, प्रथम **विष्णु अपराजिता महायन्त्र** तथा दूसरा **विष्णु महाविद्या माला,** इसके अलावा अन्य सामान्य पूजन सामग्री अर्थात् गुलाल कुंकुम, धूप, दीप, प्रसाद, फल, पुष्प इत्यादि का भी प्रयोग होता है।

विष्णु अपराजिता महायन्त्र जिस पर आप साधना करें वह किसी को भी दान में अथवा उपहार में न दें, चाहे वह व्यक्ति कितना ही निकटस्थ क्यों न हो। इस महायन्त्र को सदैव अपने पूजा स्थान में स्थापित रखना चाहिए।

जहां तक साधना प्रारम्भ करने का प्रश्न है, यह साधना किसी भी शुभ मुहूर्त में शुभ तिथि से प्रारम्भ की जा सकती है। शुक्ल पक्ष इसके लिए विशेष श्रेष्ठ रहता है।

साधना विधान

अपने सामने एक पीढ़े पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर एक थाली में यन्त्र को स्थापित कर उसका पूजन

करें, सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर मानसिक आज्ञा प्राप्त करें, तत्पश्चात् पूजन सामग्री से इस यन्त्र का पूजन करें, इस पूजन में सर्वप्रथम विनियोग फिर न्यास तत्पश्चात् दिग्बन्ध और ध्यान कर साधना प्रारम्भ करना है—

विनियोग

ॐ अस्य श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या माला मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः पंक्तिश्छन्दः। श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या देवता। ॐ ह्लां व्रां बीजं। ॐ ह्लीं व्रीं शक्तिः। ॐ ह्लूं व्रूं कीलकं। मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थ श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या माला मन्त्र जपे विनियोगः॥

न्यास

ॐ ह्लां व्रां महाविद्यायै नमः अंगुष्ठाभ्यां। ॐ ह्लीं व्रीं महामायायै नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्लूं व्रूं महामेधायै नमः मध्यमाभ्यां। ॐ ह्लैं व्रैं महामन्त्रायै नमः अनामिकाभ्यां। ॐ ह्लौं व्रौं महासिद्धायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां। ॐ ह्लः व्रः महापराजित यै नमः करतल करपृष्ठाभ्यां।

दिग्बन्ध

ॐ ह्लीं सर्व भूत निवारणाय सांगाय सशरायास्त्र राजाय सुदर्शनाय हुं फट् ह्लीं ॐ स्वाहा॥

अपने हाथ में जल ले कर दिग्बन्ध का जप तीन बार करना है, और तीनों बार जल सामने पीढ़े पर स्थापित यन्त्र के चारों ओर तथा अपने स्वयं के चारों ओर गोल घेरे के रूप में डालना है, इससे साधना काल के दौरान किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न नहीं होता तथा दुष्टात्माएं, भूत-प्रेत पिशाच साधना को खण्डित नहीं कर सकते।

ध्यान

चतुर्भुजां पीतवस्त्रां शंख-चक्र गदा धराम्। मुक्ताभरण भूषणां पद्म नेत्रां द्विलोचनाम्॥
पीत गन्ध विलेपांगीं पीताभरण भूषिताम्। पद्म हस्तां सुपद्मांगीं गरुडासन संस्थिताम्॥
दैत्य दानव संहारीं महाविष्णु वर प्रदाम्। ध्यायै महाविद्यामहं विष्णु साम्राज्य दायिनीम्॥

इस प्रकार दोनों हाथ जोड़ कर भगवान श्रीविष्णु का ध्यान करना है और उनसे वर प्राप्ति की प्रार्थना करनी है।

अब मुख्य रूप से **श्रीविष्णु महाविद्या माला** का पूजन एक दूसरी थाली में सम्पन्न करना है तथा गले में माला धारण कर निम्न अपराजिता मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दें—

ॐ नमो भगवती ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री भगवती वज्र प्रस्तारिणी प्रत्यंगिरे बगले तारे वज्र वैरोचनीये धूमावती छिन्नमस्तके भग मालिनी मां रक्ष रक्ष पालय पालय स्व-सुतानिव महदानन्दं कुरु कुरु सर्व मंगलाभीष्टं देहि देहि एहि एहि मम हृदयं निवासय निवासय सर्व दुःख दारिद्रयं निर्मूलय

निर्मूलय सर्व शत्रून निवृत्तय निवृत्तय सर्व विघ्न त्रिताप सन्ताप महा पापादि सर्व दुष्टोपद्रव भंजय भंजय हन हन कालेश्वरी गौरी धर्मिणी विद्ये आले ताले माले गन्धे बन्धे पच पच विघ्नान्नाशय विघ्नान्नाशय संहारय संहारय दुःस्वप्नान् विनाशय विनाशय रजनी संध्ये साधक संजीवनी कालमृत्यु महामृत्यु अपमृत्यु विनाशिनी विश्वेश्वरी द्रविडी द्राविडी केशव दनिते पशुपति सहिते विरचि वनिते दुन्दुभि शमने शबरी किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ज्रां ज्रां ज्रां क्रां क्रां क्रां तुरु तुरु मुरु मुरु तुट् तुट् ये मां द्विषन्ति निन्दन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा सर्वान् तान् दम् दम् मर्द मर्द तापय तापय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय कालरात्रि महारात्रि मोहरात्रि महामाये रेणुके दक्षिण काली षोडशी श्रीचक्र कृति धारिणी श्री विद्या परमेश्वरी जय जय जगदीश्वरी सर्व काम वर प्रद सर्व भूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु धन धान्यादि महदैश्वर्यं मम प्रद प्रद भग भाग्यादि सर्व मंगलं देहि देहि पुत्र पौत्रादि सुफलं फलय फलय गजाश्व शिविकादि सकल राज चिन्ह दापय दापय प्रतिष्ठय प्रतिष्ठय सर्वानन्दायुर्विद्यारोग्यं प्रद प्रद वरद वरद मम रक्ष मम रक्ष पालय पालय पोषय पोषय तोषय तोषय संजीवय संजीवय आनन्दय आनन्दय सन्तोषय सन्तोषय हर्षय हर्षय ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व जन मनोरंजिनी सर्व दुष्ट निर्दलिनी ।

ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॐ महः स्वाहा ॐ जनः स्वाहा ॐ तपः स्वाहा । ॐ सत्यः स्वाहा ॐ अतल वितल सुतल स्वाहा ॐ । ॐ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरार्क गणेश दुर्गेन्द्रादि सुरासुराय नम स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती चामुण्डा योगिनी कात्यायन्यादि सर्व शक्त्यै नमः स्वाहा । यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा । ॐ ह्रीं बलाकिनी बले महाबले अतिबले सर्व असाध्य साधिनि स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा ॥

इस पूरे मन्त्र को शान्त रूप से जप धीरे-धीरे करना है, शास्त्रोक्त कथन है कि इसका पाठ श्रीविष्णु महा यन्त्र से आगे करने से ही साधक को सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इस मन्त्र का एक सौ बार जप करने से छोटे-मोटे मनोरथ पूर्ण होते हैं । एक हजार मन्त्र जप आवृत्ति करने से सिद्धि प्राप्त होती है । दस हजार मन्त्र जप आवृत्ति करने से सब प्रकार का मंगल प्राप्त होता है और एक लाख मन्त्र जप करने से तो साक्षात् भगवान विष्णु साधक के भीतर स्थित हो जाते हैं ।

इस प्रकार का यह महाअनुष्ठान सिद्ध अनुष्ठान है और सभी वैष्णव साधकों के लिए यह उचित रहेगा कि वे कम से कम एक बार तो अपनी पूजा में इस मन्त्र का जप रात्रि में अवश्य ही करें । ●

जीवन के पांच प्रधान सुख
पांच साधनाओं से
जिन्हें सम्पन्न करना
प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही है

साधना के क्रम में पांच साधनाएं सबसे महत्वपूर्ण मानी गई हैं जो जीवन के पांच महत्वपूर्ण पक्षों से सम्बन्ध रखती हैं, तारा साधना–लक्ष्मी प्राप्ति हेतु, बगलामुखी साधना–शत्रु संहार के लिए, भूत-प्रेत साधना–कार्य सिद्धि हेतु, वशीत्व साधना–वशीकरण सिद्धि हेतु, तथा जीवन में प्रेम आकर्षण, शारीरिक सुख हेतु–उर्वशी साधना।

साधना के क्षेत्र की ये पांच साधनाएं जिन्हें सम्पन्न करना प्रत्येक साधक का एक प्रकार से कर्त्तव्य ही है, क्योंकि इन साधनाओं में जो सिद्धियां प्राप्त होती हैं उसके माध्यम से ही जीवन में श्रेष्ठता एवं पूर्णता आ सकती है और जब पूज्य गुरुदेव वरदान स्वरूप ये साधनाएं प्रदान कर रहे हैं तो क्यों नहीं इन्हें सम्पन्न किया जाय।

इन पांच साधनाओं की कुछ विशेषताएं हैं—

१-ये साधनाएं अत्यन्त सरल हैं और कोई भी गृहस्थ पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है।

२–इनमें कम से कम साधना सामग्री का प्रयोग होता है।

३–ये कम से कम दिनों में सम्पन्न हो सकती हैं।

४-यदि पूरी निष्ठा से इन साधनाओं को सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

५–इन साधनाओं को सम्पन्न करते समय किसी विशेष मार्गदर्शक की आवश्यकता नहीं होती।

६–ये साधनाएं आप अपने घर पर बैठकर भी संपन्न

कर सकते हैं, यहां तक कि आप अपना दैनिक व्यापार या नौकरी करते हुए भी इन साधनाओं को कर सकते हैं।

७–इनसे सम्बन्धित मन्त्र जप दिन या रात्रि में कभी भी कर सकते हैं।

८–इन साधनाओं से किसी प्रकार के मन्त्र जप से विपरीत प्रभाव नहीं होता।

वास्तव में ही ये साधनाएं आज के जीवन के चमत्कार हैं, आश्चर्य हैं और उन्हें आप एक साथ नहीं तो धीरे-धीरे कर सकते हैं, यह अंक आप संभाल कर रखें और समय मिलने पर इनमें से कोई न कोई साधना अवश्य सम्पन्न करते रहें।

१-सम्पूर्ण लक्ष्मी सिद्धि–तारा साधना

यह दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या और संसार की अद्वितीय धनदायक देवी है, हजारों वर्षों से ऋषि मुनि और हमारे पूर्वज तारा साधना सम्पन्न करते आये हैं, क्योंकि निष्ठापूर्वक की गई इस साधना में सफलता प्राप्त होती है और मनोवांछित वरदान प्राप्त होता है।

इसके साथ ही साथ इस साधना को सम्पन्न करने पर महाविद्या सिद्ध हो जाती है और भौतिक दृष्टि से जीवन में वह जो कुछ भी चाहता है, उसे प्राप्त हो जाता है।

साधना रहस्य

इस साधना को किसी भी महीने में प्रारम्भ की जा सकती है, मेरी राय में यदि रविवार की रात्रि से यह साधना प्रारम्भ की जाय तो ज्यादा अनुकूल रहती है तथा शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। इसमें निम्न उपकरणों की आवश्यकता विशेष रूप से पड़ती है—

१-जलपात्र, २-कुंकुम (रोली), ३-अक्षत, ४-आधा-मीटर चौकोर लाल वस्त्र, ५-मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्टा युक्त **'तारा यन्त्र एवं चित्र'**, ६-दो तोला गन्धक का चूर्ण, ७-**'तारा वत्सनाभ'**।

साधना विधि

रविवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय, सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा दें और सामने **'तारा यन्त्र व चित्र'** स्थापित कर दें, फिर सामने गन्धक की सात ढेरियां बना दें, चौथी ढेरी पर तेल का दीपक स्थापित कर दें. इस दीपक मे किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है. दीपक के सामने ही **'तारा वत्सनाभ'** को स्थापित कर दें और उसके आगे जलपात्र कुंकुम अगरबत्ती आदि रख दें।

सर्वप्रथम जल से यन्त्र चित्र को धोकर रख दें, अक्षत चढ़ा दें, फिर तारा वत्सनाभ को जल से धोकर पोंछ कर उस पर माचिस की सलाका से या किसी भी सलाका से कुंकुम के द्वारा निम्न मन्त्र लिखें—

"ॐ तारा तूरी स्वाहा"।

इसके बाद दीपक व अगरबत्ती जला दें तथा **'मूंगे की माला'** से मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें नित्य ६० माला मन्त्र जप अनिवार्य है तथा यह मात्र छः दिनों की साधना है, यह साधना नित्य रात्रि में ही सम्पन्न की जाती है, जब छठे दिन भगवती तारा के प्रत्यक्ष दर्शन हों तो उसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वह भौतिक जीवन से सम्बन्धित सभी इच्छाएं पूरी करे और नित्य स्वर्ण प्रदान करे।

इसके बाद तारा यन्त्र चित्र पूजा स्थान में रख दें और 'तारा वत्सनाभ' को उसी लाल वस्त्र में लपेट कर घर के किसी सुरक्षित स्थान में रख दें, इस प्रकार करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त होता है जो साधक की इच्छा होती है।

इसमें निम्न गोपनीय मन्त्र का प्रयोग किया जाता है—

मन्त्र

।। ॐ ऐं क ल ह्रीं ऐं तारायै सिद्धि
देहि देहि ॐ ऐं क ल ह्रीं ऐं नमः ।।

वस्तुतः यह साधना अपने आपमें चमत्कार ही है और और जो इसे सिद्ध कर लेता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें

२-शत्रु एवं बाधा निवारण हेतु बगलामुखी सिद्धि

आज का जीवन अत्यधिक असुरक्षित और भयप्रद बन गया है समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, छल, हिंसा और शत्रुता का वातावरण बन गया है फलस्वरूप यदि व्यक्ति शान्ति पूर्वक रहना चाहे भी तब भी सम्भव नहीं होता।

यह साधना शत्रुओं को परास्त करने उन्हें समाप्त करने तथा लड़ाई-झगड़े, मुकदमें आदि में पूर्ण सफलता देने में विशेष रूप से सहायक है, यही नहीं अपितु यदि अचानक कोई संकट आ गया है तब भी यह साधना संपन्न करने पर वह संकट समाप्त हो जाता है, और सामने वाला व्यक्ति शत्रु भाव भूल जाता है।

जीवन की सुरक्षा और शत्रुओं पर निर्मम प्रहार करने और उन्हें समाप्त करने की दृष्टि से यह अपने आपमें अद्वितीय साधना है प्रत्येक साधक को यह साधना अपने जीवन में अवश्य सम्पन्न करना चाहिए इससे जहां एक ओर महाविद्या तो सिद्ध होती है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति शत्रुओं की तरफ से निश्चिन्त हो जाता है. यदि कोई व्यापार में बाधक बन रहा हो या बॉस अथवा आफीसर नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा हो या किसी ने आप पर मुकदमा कर दिया हो अथवा आपको प्राणों का भय हो या आप किसी भी दृष्टि से असुरक्षित अनुभव कर रहे हों तो यह साधना सर्वश्रेष्ठ साधना है, यदि निष्ठपूर्वक इस साधना को सम्पन्न की जाय तो हाथो हाथ फल प्राप्त होता है, तथा जीवन में पूर्ण अभयता प्राप्त होती है।

साधना रहस्य

किसी भी महीने के मंगलवार से रात्रि को यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है, इसमें निम्न उपकरण होने चाहिए —

१-जल पात्र, २-कुंकुम (रोली), ३-चावल, ४-आधा मीटर चौकोर पीला वस्त्र, ५-मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त **'बगलामुखी यन्त्र व चित्र'**, **'हरिद्रा हंसराज'**।

साधना विधि

मंगलवार की रात्रि को स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जांय, साधक पीली धोती ही पहनें और यज्ञोपवीत को पीले रंग में रंग कर गले में धारण कर लें फिर सामने पीले वस्त्र पर **'बगलामुखी यंत्र-चित्र'** स्थापित कर दें **और** उसके सामने ही **'हरिद्रा-हंसराज'** स्थापित कर दें और उसके सामने ही 'हरिद्रा-हसराज वनस्पति' को भी स्थापित करें, तत्पश्चात् अगर-बत्ती और दीपक लगा लें, इसमें शुद्ध घी का ही दीपक लगाया जाना चाहिए, साधना में यदि **'हल्दी की माला'** का प्रयोग करें तो ज्यादा उचित रहता है।

सर्वप्रथम जल से यन्त्र चित्र को धोकर केसर लगावें और फिर हरिद्रा हंसराज पर निम्न मन्त्र दियासलाई की सलाका से या किसी तिनके से केसर के द्वारा अंकित करें -

"ॐ पीताम्बरा देव्यै नमः"।

फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें ग्यारह दिनों में सवालाख मन्त्र जप करने होते हैं इस प्रकार १२५ मालाए नित्य मन्त्र जप करनी चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखीं (अमुक) शत्रुणां
नाशय मर्दय ह्लीं फट् ।।

यह मन्त्र छोटा सा है पर अपने आपमें अत्यधिक महत्वपूर्ण है, निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए और साथ ही साथ ग्यारह दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, इस मन्त्र में अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु के नाम का उल्लेख करना चाहिए।

जब ग्यारह दिन में मन्त्र जप पूरा हो जाय तो उस हरिद्रा हंसराज को जंगल में जाकर लकड़ियां जला कर उसमें उसे जला देना चाहिए।

इस प्रकार करने पर तुरन्त मनोवांछित कार्य सिद्धि हो जाती है और जीवन में हम जो कुछ चाहते हैं वैसा हो जाता है, वास्तव में ही यह साधना अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण और शीघ्र सिद्धिदायक है।

३-कार्य सिद्धि साधना—भूत साधना

हमारा विश्वास भूत-प्रेतों के प्रति कुछ भी हो परन्तु यह सत्य है कि जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियां होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य और देवता के अलावा भूत-प्रेत आदि जातियां भी होती हैं, और ये भी मनुष्य की तरह से सुख-दुःख प्यार घृणा आदि अनुभव करते हैं, जिस प्रकार एक मनुष्य से सामान्यतः भय नहीं होता उसी प्रकार मनुष्य को भूत जाति से भी भय नहीं हो सकता, जिस प्रकार मनुष्य अपनी सामर्थ्य के बल पर दूसरे मनुष्य को नौकर रख कर उससे कार्य करा सकता है, उसी प्रकार कोई व्यक्ति साधना कर भूत को नौकर के रूप में रख सकता है और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करा सकता है।

यह बात भी अब सिद्ध हो चुकी है कि भूत-प्रेत किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं पहुंचाते, यदि क्रोधित भी होते हैं तो भी कोई तकलीफ नहीं देते, मनुष्य से ज्यादा सेवा करते हैं, चौबीसों घण्टे आज्ञा पालन में तत्पर रहते है तथा वे सभी कार्य कर देते हैं जो कि मनुष्य के लिए स्वाभाविक रूप से असंभव होता है।

भूत त्रि-आयामी होने के कारण लगभग अदृश्य होते रहते हैं, पर जिससे भूत सिद्ध किया हुआ होता है, वह स्पष्ट दिखाई देता है, ये अत्यधिक बलशाली होते हैं, हवा की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं, इस लिए ये कठिन से कठिन कार्य भी कर सकते हैं।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकते हैं और इस साधना से किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती।

साधना रहस्य

इस साधना को किसी भी महीने के कृष्ण पक्ष के रविवार की रात्रि से प्रारम्भ की जा सकती है, इसमें निम्न उपकरण होने चाहिए—

१-आधा मीटर काला वस्त्र, २-मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त **'भूत डामर यन्त्र'**, ३-तेल का दीपक, ४ **'बड़हल का टुकड़ा'**।

साधना विधि

रविवार की रात्रि को बिना स्नान किये काली धोती पहन कर काले आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय सामने काला वस्त्र बिछा दें और उस पर **'भूत डामर यन्त्र'** को रख दें, इसके सामने ही **'बड़हल का टुकड़ा'** स्थापित कर उस पर निम्न मन्त्र काली स्याही से छोटे-छोटे अक्षरों में लिख दें—

"ॐ भूताय वशं करि करि स्वाहा"।

इसके बाद तेल का दीपक लगाकर फिर **'सर्प अस्थियों की माला'** या **मूंगे की माला** से निम्न मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ श्मशान भूताय वशं करि
मम आज्ञा पालय पालय फट् ।।

इस मन्त्र की नित्य १०१ माला मन्त्र जप अनिवार्य है, मात्र ११ दिन तक मन्त्र जप करने पर ११वें दिन भूत सामने प्रत्यक्ष होता है तथा आज्ञा मांगता है तब साधक उसे आज्ञा दें कि मैं जो भी कार्य कहूंगा तुझे पूरा करना है, तब वह भूत वचन देकर चला जाता है और इसके बाद जब भी वह साधक उपरोक्त मन्त्र का तीन बार उच्चारण करता है तो वह भूत उसकी आंखों के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है, और तुरन्त आज्ञा पालन करता है।

साधना प्रारम्भ होने पर बड़हल के टुकड़े को ताबीज में भर कर अपनी बांह पर बांध लेना चाहिए तथा 'भूत डामर यन्त्र' को काले कपड़े में लपेट कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिए।

निश्चय ही यह साधना अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा गायत्री उपासक अथवा सौम्य साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

४-सर्व प्रभावकारी सम्मोहिनी– वशीकरण साधना

आज के युग में वशीकरण साधना एक अनिवार्य साधना बन गई है, क्योंकि चारों तरफ नफरत द्वेष और धोखा बढ़ गया है, प्रेमी प्रेमिका को धोखा दे देता है, भाई-भाई से दुश्मनी कर लेता है तथा अकारण ही शत्रु पैदा होते रहते हैं, अधिकारी वर्ग नाराज रहता है, हमारे पास काम करने वाले विश्वास पात्र नहीं रहते हैं, पार्टनर की तरफ से धोखा होने की सम्भावना रहती है, इन सभी स्थितियों में वशीकरण प्रयोग अपने आपमें एक आश्चर्यजनक प्रयोग है, यह प्रयोग अभी तक गोपनीय रहा है, पर इस प्रयोग से पत्थर जैसे कठोर हृदय को भी अपने वश में किया जाता है, और जीवन भर उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है तथा इससे कोई अहित होता है।

साधना रहस्य

इस साधना में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१-जलपात्र, २-कुंकुम, ३-अक्षत, ४-काजल की डिब्बी, ५ वशीकरण ताबीज, ६-रतनजोत।

साधना विधि

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को स्नान कर सफेद धोती पहन कर सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जांय, सामने सफेद वस्त्र बिछा दें और उस पर **'वशीकरण ताबीज'** तथा उसके सामने **'रतनजोत'** स्थापित कर दें, फिर यन्त्र को स्नान कराकर उस पर कुंकुम की बिन्दी लगावें तथा अक्षत चढ़ावें बाद में रतनजोत पर केसर से उस व्यक्ति या स्त्री का नाम लिखें जिसे वश में करना हो, यदि बहुत लोगों को एक साथ अपने अधीन करना हो तो उस पर "सर्वजन" शब्द लिखें।

इसके बाद तेल का दीया लगा दें और **'स्फटिक माला'** से निम्न मन्त्र की नित्य १०१ माला मन्त्र जप करें, यह पांच दिन की साधना है, और साधना सम्पन्न होने पर उस ताबीज को लाल या पीले धागे में पिरो कर बांह पर बांध लें तथा रतनजोत को सफेद कपड़े में लपेट कर किसी स्थान पर रख दें।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं (अमुकं) वश्य करि
करि मम आज्ञा पालय पालय फट् ।।

इसमें 'अमुकं' शब्द के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करें जिसे वश में करना हो अथवा आप 'सर्वजन' का उच्चारण भी कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह साधना आज के युग में अत्यधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है, तथा इस साधना से किसी पत्थर दिल व्यक्ति को भी अपने अधीन कर उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराये जा सकते हैं ।

५-सौन्दर्य सुख प्रेम की पूर्णता हेतु-उर्वशी साधना

रम्भा उर्वशी और मेनका तो देवताओं की अप्सराएं रही हैं, और प्रत्येक देवता इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं, यदि इन अप्सराओं को देवता प्राप्त करने के इच्छुक रहे हैं तो मनुष्य भी इन्हें प्रेमिका रूप में प्राप्त कर सकते हैं ।

इस साधना को सिद्ध करने में कोई दोष या हानि नहीं है, तथा जब अप्सराओं में श्रेष्ठ उर्वशी सिद्ध होकर वश में हो जाती है, तो वह प्रेमिका की तरह मनोरंजन करती है, तथा संसार की दुर्लभ वस्तुएं और पदार्थ भेंट स्वरूप लाकर देती है, जीवन भर यह अप्सरा साधक के अनुकूल बनी रहती है, वास्तव में ही यह साधना जीवन की श्रेष्ठ एवं मधुर साधना है, तथा प्रत्येक साधक को इस सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए ।

साधना रहस्य

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है, जिसमें निम्न उपकरण की विशेष रूप से आवश्यकता रहती है—

१-जलपात्र, २-केसर, ३-पुष्प, ४ आधा मीटर चौकोर पीला वस्त्र, ५-मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा **'उर्वशी यन्त्र'**, ६-**'सोनवल्ली'** ।

साधना विधि

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक स्नान कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाएं तथा सामने पीला वस्त्र बिछा कर उस पर **'उर्वशी यन्त्र'** स्थापित कर दें तथा सामने पांच गुलाब के पुष्प रख दें, फिर पांच घी के दीपक लगा दें और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दें, फिर उसके सामने **'सोनवल्ली'** रख दें और उस पर केसर से तीन बिन्दियां लगा लें और मध्य में निम्न शब्द अंकित करें—

" ॐ उर्वशी प्रियवशं करि हुं " ।

इस मन्त्र के नीचे केसर से अपना नाम लिख लें फिर साधक पीली धोती पहन कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर **'स्फटिक माला'** से निम्न मन्त्र की १०१ माला मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं उर्वशी मम प्रिय मम
चिन्तानुरंजन करि करि फट् ।।

यह मात्र सात दिन की साधना है और सातवें दिन अत्यधिक सुन्दर वस्त्र पहिन यौवन भार से दबी हुई उर्वशी प्रत्यक्ष उपस्थित होकर साधक के पास बैठ जाती है और कहती है कि तुमने मुझे साधना से अपने वश में किया है मैं जीवन भर आप जो भी आज्ञा देंगे उसका पालन करूंगी ।

तब पहले से ही लाया हुआ गुलाब के पुष्पों का हार उसके गले में पहिना देना चाहिए, इस प्रकार यह साधना सिद्ध हो जाती है और बाद में जब कभी उपरोक्त मन्त्र का तीन बार उच्चारण किया जाता है तो वह प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा साधक जैसी आज्ञा देता है वह पूरा करती है ।

साधना समाप्त होने पर **उर्वशी यन्त्र** धागे में पिरोकर अपने गले में धारण कर लेना चाहिए सोनवल्ली को पीले कपड़े में लपेट कर घर में किसी स्थान पर रख देना चाहिए, इससे उर्वशी जीवन भर वश में बनी रहती है ।

ये पांचों साधनाएं आज के युग की आश्चर्य हैं और प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इन साधनाओं को सम्पन्न करनी चाहिए और सभी दृष्टियों से जीवन को पूर्णता देनी चाहिए । ●

यदि साधना में सिद्धि प्राप्त करनी है

तो

यही चार प्रमुख आधार हैं

प्रत्येक साधक साधना में सफलता प्राप्त करना चाहता है, परन्तु इनमें से कुछ साधक तो सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, पर कुछ साधकों को सफलता नहीं भी मिलती।

पिछले दिनों हमने लगभग तीन सौ साधकों से साक्षात्कार किया उनकी साधना पद्धति देखी, उनका मन्त्र जप देखा और उन तथ्यों की ओर पहुंचने की कोशिश की जिसकी वजह से उनको सफलता नहीं मिल पाती, इस सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि चार कारणों से साधना सिद्धि में सफलता संशय ग्रस्त हो जाती है।

इस सर्वेक्षण से जिन तथ्यों की जानकारी प्राप्त हुई उसे आगे की पंक्तियों में स्पष्ट किया जा रहा है, जिसके आधार पर असफलता के कारण और उनके निवारण के साथ ही उन रहस्यों को स्पष्ट किया जा रहा है जिनके आधार पर साधनाओं में सफलता मिलती ही है।

पूर्वजन्म कृत दोष

हमें इस जीवन में यह ज्ञात नहीं होता कि हमारे पूर्व जन्म के दोष हैं भी या नहीं। साथ ही साथ इस बात का भी चिन्तन करना चाहिए कि आज के युग में हम जिस वातावरण में रह रहे हैं, उस वातावरण में भी दोष लगना या होना सम्भव है, ये दोष तीन कारणों से होते हैं – १-मुख दोष-असत्य उच्चारण करने से। २-दृष्टि दोष –किसी भी स्त्री को गन्दी या अश्लील नजर से देखने से। ३-चिन्तन दोष–अपने गुरु या देवता के प्रति मन में संशय या कुविचार उत्पन्न करने से।

ये तीनों ही दोष थोड़े बहुत रूप में व्यक्ति को होते ही हैं यही नहीं अपितु इसके अलावा भी हमारे द्वारा ऐसी कई घटनाएं घटित हो जाती हैं, जिनकी वजह से साधना में दोष लग सकता है, पिछले जीवन में हो सकता है, हमसे कोई जघन्य अपराध या पाप हो गया हो, हो सकता है हमारे द्वारा गुरु के साथ विश्वासघात या गुरु परिवार के प्रति किसी प्रकार का दोष व्याप्त हो गया हो, इसलिए साधना में पूर्वजन्म कृत दोष और इह जन्म कृत दोष बाधक स्वरूप माने गये हैं।

इस दोष के परिमार्जन के लिए साधना से पूर्व दोष निवृत्ति मन्त्र का जप कर देना चाहिए, मेरी राय में थोड़े बहुत रूप में यह मन्त्र जप कर लेना चाहिए, इससे धीरे-धीरे पिछले जन्म के दोष और पाप तो कटेंगे ही, इस जीवन में किये गये दोष भी समाप्त होंगे, यही नहीं अपितु नित्य प्रति के व्यवहार में जो दोष व्याप्त हो जाते हैं वे भी समाप्त हो सकेंगे, इससे सम्बन्धित गोपनीय मन्त्र इस प्रकार से है –

मन्त्र

ॐ तत्सवितुर्वरेण्य सर्व दोष पापान् निवृत्तय धियो योनः प्रचोदयात् ।।

इसके लिए कोई मन्त्र जप संख्या निर्धारित नहीं है, यथासंभव जब भी साधक को अवसर मिले तो इस मन्त्र का जप करना चाहिए, फिर भले ही चाहे एक माला मन्त्र जप हो, चाहे सौ माला जप, मगर इससे साधना में सिद्धि प्राप्त होने में सुविधा होती है।

तप

तप से तात्पर्य है, अपने आपको तपाना। साधक को चाहिए कि वह अपने शरीर को और अपने अन्तःकरण को तपा कर शुद्ध कर दे, तपाने से तो मिट्टी के बर्तन भी धातु की तरह सख्त हो जाते हैं, सोने को भी तपाने से वह चमकने लगता है, इसलिए साधक को अपने जीवन में तपस्या को विशेष महत्व देना चाहिए, इस तपस्या के अन्तर्गत पांच नियम अपेक्षित हैं—१-अत्यन्त सादा रहन-सहन, २-सामान्य शुद्ध और सरल शाकाहारी भोजन, ३-अहंकार का त्याग, ४-सदाचार आचरण, ५-एक ही आसन पर बैठ कर तपस्या के द्वारा शरीर, मन और अन्तःकरण को शुद्ध एवं पवित्र बनाना।

इन सभी कार्यों से एक तरफ जहां साधक में सात्विकता का उदय होगा वहीं दूसरी ओर उसका शरीर और मन शुद्ध और पवित्र होकर दिव्य बन जायेगा, जिसकी वजह से वह साधनाओं में सफलता पा सकेगा, इस शुद्ध मन की वजह से अपने इष्ट के साक्षात् दर्शन करने में भी पूर्णता प्राप्त कर सकेगा, इसलिए हमारे पूर्वजों ने तपस्या को साधना का ही एक अंग माना है। जैन धर्म में तो तपस्या को ही पूरी साधना मान ली है। यह आवश्यक नहीं है कि आप केवल साधनाकाल में ही इन नियमों का आचरण करें, अपितु होना यह चाहिए कि आपको अपने जीवन को ही इस प्रकार से ढाल लेना चाहिए कि आपमें इन गुणों का विकास हो सके, समाज में आप सम्मानित हो सकें।

मन्त्र

साधना में सिद्धि सफलता के लिए मन्त्र का भी विशेष महत्व है, पुस्तकों में प्राप्त अधिकतर मन्त्र अशुद्ध और दोष-युक्त होते हैं, इसके साथ ही साथ शास्त्रों में ऐसी मान्यता है कि यथासंभव मन्त्र गुरु के द्वारा दिया हुआ ही अपनाना चाहिए वह चाहे गुरु स्वयं उच्चारण करके बताये, पत्र में लिख कर आज्ञा दे या उनके द्वारा प्रवृत्त पत्रिका में प्रकाशित मन्त्र का उपयोग करें, तीनों ही रूपों में मन्त्र की महत्ता सिद्ध हो जाती है।

इस बात का भी चिन्तन होना चाहिए कि मन्त्र प्रमाणित और शुद्ध हो, साथ ही साथ मन्त्र के प्रति पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए, जितनी अधिक श्रद्धा मन्त्र के प्रति होगी साधना में सफलता भी उतनी ही ज्यादा हो सकेगी।

वैसे तो मन्त्र कई प्रकार के होते हैं, जिनमें अघोर मन्त्र, कपाली मन्त्र, तांत्रिक मन्त्र, सामान्य मन्त्र, भक्ति मन्त्र और अन्य प्रकार के मन्त्र होते हैं, प्रत्येक साधक हर प्रकार की साधना सम्पन्न कर सकता है, इसमें किसी प्रकार का कोई दोष नहीं होता, आवश्यकता है सही प्रकार से साधना को समझने की, सन्तुलित मन की, मन्त्र से सम्बन्धित विधि-विधान की और मन्त्र के प्रयोग की।

वास्तव में ही अधिकतर साधक मन्त्र का उच्चारण भली प्रकार से नहीं कर पाते या स्थिर होकर साधना सम्पन्न नहीं कर पाते, या साधना काल में मन्त्र जप करते समय जम्भाई, आलस्य आदि ले लेते हैं, इसी वजह से साधना में सफलता कम मिल पाती है, इस तरह साधकों को विशेष ध्यान देना चाहिए।

गुरु

साधना में स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि बिना गुरु के अन्य सभी मन्त्र तन्त्र प्रयोग आधार नियम व्यर्थ हैं। जीवन में इष्ट से ज्यादा गुरु का महत्व होना चाहिए, क्योंकि उनकी तपस्या के द्वारा ही शिष्य में आत्म चेतना पैदा होती है, जब गुरु शिष्य को दीक्षा देता है तो उसके प्राणों को अपने प्राणों से जोड़ देता है और इस प्रकार अपनी तपस्या का कुछ अंश उसे प्रदान कर देता है, इसलिए सर्वप्रथम तो गुरु से दीक्षा लेना परम आवश्यक है, इसके अलावा भी साधना सिद्धि में पांच तत्व और भी आवश्यक हैं—१-गुरु से दीक्षा प्राप्त करना, २-गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित रहना, ३-गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धावान बने रहना, ४-किसी भी परिस्थिति या आलोचनाओं के बीच भी गुरु के प्रति आस्था को न्यून न करना और ५-यथा संभव गुरु की सेवा करना।

साधना में गुरु को सर्वोत्तम महत्व दिया गया है, क्योंकि गुरु ही इष्ट है, गुरु ही साधना है और गुरु ही जीवन की पूर्णता है। ●

ग्रहण काल के विशेष प्रयोग

निकट भविष्य में ही सूर्य ग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण पड़ रहे हैं, ग्रहण काल साधनाओं के लिए सर्वोत्तम माना गया है। इन दोनों दिवसों पर प्रत्येक साधक को साधना अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। आगे कुछ विशेष सामग्री का वर्णन स्पष्ट किया जा रहा है, जिन पर प्रयोग करने से ग्रहण काल में निश्चित सफलता प्राप्त होती ही है। इस प्रकार की सामग्री यहां कार्यालय में ग्रहण मुहूर्त को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से सिद्ध की गई है।

आने वाले समय में जो दो महत्वपूर्ण ग्रहण पड़ रहे हैं वे निम्न हैं—

१-खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण—**दिनांक ९-१२-९२**

२-खण्डग्रास सूर्य ग्रहण—**दिनांक २३-१२-९२**

ये दोनों ग्रहण भारत में दृश्यमान नहीं होंगे लेकिन आकाश मण्डल में जो ग्रहण काल बनेगा उसका प्रभाव ही महत्वपूर्ण है और यही शास्त्र सम्मत है।

अतः साधकों को चाहिए कि वे इन ग्रहण समयों का विशेष साधनात्मक कार्य के लिए प्रयोग में लाएं और अपनी इच्छानुसार नीचे लिखी हुई साधनाओं में से कोई एक साधना सम्पन्न कर सकते हैं—

१-खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण

९-१२-९२ को खग्रास चन्द्र ग्रहण है, इस ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि को १० बज कर ३२ मिनट से होगा तथा समाप्ति काल आधी रात के बाद १ बज कर ५८ मिनट पर सम्पन्न होगा, इस प्रकार इस पूरी अवधि में धीरे-धीरे चन्द्र ग्रस्त होता हुआ ठीक १२ बज कर १८ मिनट पर पूर्ण खग्रास हो जायेगा और फिर धीरे-धीरे शुद्ध होता हुआ १ बज कर ५८ मिनट पर पूर्णतः निर्मल हो जायेगा, सनातन धर्मियों की दृष्टि से इसका सूतक दिन में २ बजे से लग जायेगा अतः २ बजे के बाद खानपान आदि वर्जित है।

२-खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

इस ग्रहण का प्रारम्भ प्रातः ६ बज कर ३ मिनट से प्रारम्भ होगा और मध्याह्न २ बज कर २१ मिनट पर पूर्ण रूप से मोक्ष हो जायेगा। इस कारण इस छः घण्टे के समय तथा इसके पहले ही १२ घण्टे के समय को

ग्रहण काल ही माना जाता है। साधक इस समय का सदुपयोग करें।

आगे कुछ विशेष सामग्री विवरण दिया जा रहा है, और उस सामग्री को मन्त्र सिद्ध रूप से शुद्ध कर स्थापित कर प्रयोग करने से आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होता है।

यहां से बात ध्यान रखें कि ग्रहण काल में जो सामग्री साधना प्रयोग में लाते हैं वह सामग्री किसी अन्य काल में साधनात्मक कार्यों हेतु प्रयुक्त नहीं की जा सकती। हां, आगे जब भी ग्रहण योग बने तब उसी सामग्री को प्रयोग में लिया जा सकता है।

१-ग्रहण तांत्रोक्त हत्थाजोड़ी

हत्थाजोड़ी प्रकृति का मानव को रहस्यमय वरदान है। यह जंगल में स्वतः प्राप्त होती है, और इसका स्वरूप दोनों हाथ परस्पर जुड़े हुए के समान होता है। बिरले भाग्यशाली लोगों के घर में ही इस प्रकार की आश्चर्यजनक वस्तु पायी जाती है।

शास्त्रों में हत्थाजोड़ी को लक्ष्मी का रूप भी कहा गया है। अतः यदि कुछ भी नहीं किया जाय और असली हत्थाजोड़ी घर में रहे तब भी व्यक्ति स्वतः ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बना रहता है।

प्रयोग

ग्रहण के दिन साधक को चाहिए कि वह ग्रहण काल में पश्चिम की तरफ मुंह करके बैठ जांय तथा अपने सामने हत्थाजोड़ी को रख दें। निम्न मन्त्र की पांच माला जप करें तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं स्थिर अष्टलक्ष्म्यै स्वाहा ॥

यदि **'कमलगट्टे की माला'** का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

इस प्रकार जब मन्त्र जप समाप्त हो जाय तब साधक को चाहिए कि वह उस हत्थाजोड़ी को अपने सन्दूक या लॉकर में रख दें अथवा जहां पर गहने आदि कीमती वस्तुएं रखी जाती हैं वहां रख दें तो साधक के जीवन में आर्थिक अभाव नहीं रहता, व्यापार में उन्नति होती रहती है। यदि स्वयं बेरोजगार होता है तो वह नौकरी प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है तथा यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, वैभव सम्पत्ति आदि की दृष्टि से उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है।

इस प्रकार की हत्थाजोड़ी कई वर्षों तक अनुकूल परिणाम देती रहती है।

कहा गया है कि यदि हत्थाजोड़ी पर ग्रहण के समय प्रयोग नहीं भी किया जाय तब भी यदि हत्थाजोड़ी घर में रहती है तो उस व्यक्ति के घर में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

२-ग्रहण काल सिद्ध तांत्रोक्त महामाया चक्र

यह भी एक दुर्लभ पदार्थ है, और आसानी से प्राप्त नहीं होता इस पर विशेष चक्र बने होते हैं। जो कि स्वतः प्रकृति द्वारा निर्मित होते हैं।

ग्रहण काल में साधक को चाहिए कि ऐसा सिद्ध महा-चक्र अपने सामने रख लें और उस पर निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरें—

मन्त्र

॥ ॐ वं आरोग्यानिकरी रोगानशेषानम: ॥

इस प्रकार जब ग्रहण काल में ग्यारह माला सम्पन्न हो जाये तब साधक को यह सिद्ध महामाया चक्र सावधानी पूर्वक सुरक्षित जगह रख देना चाहिए। यह सिद्ध महा-

माया चक्र तीन वर्ष तक प्रभावयुक्त रहता है।

इसका प्रयोग बीमारी पर विशेष रूप से किया जाता है। कोई बीमारी हो तो एक साफ गिलास में शुद्ध जल लेकर उसमें यह सिद्ध महामाया चक्र डाल दें और ऊपर लिखे मन्त्र को २१ बार मन ही मन उच्चारण कर उस सिद्ध चक्र को बाहर निकाल दें तथा वह पानी रोगी को पिला दें तो वह रोगी आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ होने लगता है।

आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा प्रयोग किसी भी प्रकार के रोगी पर किया जा सकता है।

३-ग्रहणकाल तांत्रोक्त सिद्ध सियारसिंगी

प्रकृति का यह अनूठा वरदान है और तांत्रिक कार्यों में तो इसका विशेष महत्व माना गया है, और इसके माध्यम से कई दुर्लभ कार्य सिद्ध किये जाते हैं। यही नहीं, इसके द्वारा कुछ विशिष्ट क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं, जिससे साधक मनोवांछित फल प्राप्त करने में समर्थ हो पाता।

सामान्यत: जिसके भी घर में यह सियारसिंगी होती है, उसके घर पर तांत्रिक प्रयोग सफल नहीं हो पाता या यों कहा जाय कि उस व्यक्ति के परिवार के सदस्यों पर सामान्य रूप से तांत्रिक प्रयोग करने पर भी कोई हानि नहीं होती। अत: प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न यही होता है कि किसी न किसी प्रकार से इस प्रकार की सियारसिंगी प्राप्त कर घर में रखा जाय।

इसके लिए कोई विशेष जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती और यदि वह प्रयोग असफल भी हो जाता है तो साधना करने वाले को कोई हानि नहीं होती।

प्रयोग— (१)

जब ग्रहण काल हो तब साधक को चाहिए कि वह स्नान करके धोती पहन कर किसी भी प्रकार के आसन पर सियारसिंगी को अपने सामने रख कर बैठ जांय। मुंह किसी भी दिशा की ओर हो सकता है। सियारसिंगी के सामने गुग्गल या लोबान का धूप लगा दें, फिर सियारसिंगी को देखते हुए निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

।। क्लीं हुं वशमानय स्वाहा ।।

इस मन्त्र की पांच माला जप करनी चाहिए, माला किसी भी प्रकार की हो सकती है। जब पांच माला जप हो जाय तब उस सियारसिंगी को उठा कर एक तरफ रख दें।

इस प्रकार वह सियारसिंगी सिद्ध हो जाती है और बाद में यदि साधक को किसी पुरुष या स्त्री को वश में करना हो या उसे अपने अनुकूल बनना हो तो उस सियारसिंगी के सामने नीचे लिखे मन्त्र का केवल ग्यारह बार उच्चारण करें—

क्लीं हुं अमुकं (यहां पर उस व्यक्ति या स्त्री का नाम बोलना चाहिए) वश मानय स्वाहा ।।

इस प्रकार ग्यारह बार उच्चारण कर उस सियारसिंगी को अपनी जेब में रख कर उस पुरुष या स्त्री के सामने जाते ही वह वश में हो जाता है और जिस प्रकार से आप आज्ञा देंगे उसी प्रकार से वह आज्ञा का पालन करेगा ।

प्रयोग (२)

ग्रहण काल में सियारसिंगी को लाल कपड़े में लपेट कर अपने सामने रख दें और **'सिद्धिदा यक्षिणी'** को स्मरण करें, मन में यह भावना रखें कि सिद्धिदा यक्षिणी मेरे सामने आवे और जब भी मैं उसे कोई आज्ञा दूं तो वह मेरा कार्य पूरा करे । ऐसी भावना मन में रख कर नीचे लिखे मन्त्र की २१ माला जप उस सियारसिंगी के सामने करें, माला कोई भी हो सकती है, एक माला १०८ मनकों की होती है ।

मन्त्र

।। ॐ धूं धनदा यक्षिणी मम कार्यं
सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।।

ऐसा करने के बाद साधक को चाहिए कि वह उस सियारसिंगी को अपनी सन्दूक में रख दें । इसके बाद प्रत्येक दिन इसी मन्त्र की २१ मालाएं फेरे तो सात दिन के भीतर-भीतर यह यक्षिणी सिद्ध हो जाती है, और सिद्ध होने पर वह जीवन भर के लिए वश में रहती है ।

सुरभि:

बाद में उस यक्षिणी को जो भी आज्ञा दी जाती है उस आज्ञा को वह पूरा करती है । इस प्रकार से साधक, जीवन भर अनुकूल फल प्राप्त कर सकता है ।

साधना में सफलता तभी मिल सकती है जबकि साधक एकाग्र हो और मन्त्रों के प्रति उसकी पूर्ण आस्था हो साथ ही साथ वह पूर्णता के साथ कार्य करे तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है ।

ग्रहण काल साधकों के लिए वरदान स्वरूप होता है और वे इसका प्रयोग कर साधना में सफलता प्राप्त करते हैं, धैर्य, एकाग्रता, मन्त्रों के प्रति आस्था साधना में पूर्णता आदि से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है । ●

परिवार की बात : परिवार के लिए

एक सुनहरा मौका *आपके स्वयं के लाभ के लिए*

एक अभिनव अवसर–*गुरु सेवा के लिए*

एक अद्वितीय योजना–"*सिद्धाश्रम*" संस्था के लिए

प्रिय बन्धु,

एक मौका आया है, एक चुनौती का अवसर आया है, जब तुम्हें पुकार रहा हूं, आवाज दे रहा हूं, अपने ही परिवार के सदस्यों को, गुरु भाइयों को, आप सबको . . . परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से ।

संकल्प लेना है, पत्रिका के प्रत्येक सदस्य को, कि हमें अपनी प्रिय पत्रिका **'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान'** को घर-घर में पहुंचाना है, प्रत्येक बुक स्टाल पर बेचना है, क्योंकि जनवरी ९३ से यह पत्रिका ऑफसेट में छाप रहे हैं, सैकड़ों चित्रों के साथ, अद्वितीय दुर्लभ सामग्री के साथ, आकर्षण साज सज्जा और नयनाभिराम 'कवर' के साथ ।

योजना

- **आपके शहर में और आस-पास के कस्बों और शहरों में कई बुक स्टाल हैं, जो पत्रिकाएं बेचती हैं ।**
- **इस सम्बन्ध में उन्हें १० या १५ प्रतिशत कमीशन देना पड़ता है, जिससे बुक स्टाल वाले पत्रिका बेच कर लाभ उठा सकें ।**
- **आप इनसे बातचीत कर उन्हें उपरोक्त कमीशन पर जनवरी का अंक दीजिये, जिससे वे स्टाल पर रख सकें ।**
- **और यह तो निश्चित है, कि ऐसी अद्वितीय पत्रिका एक ही दिन में बिक जायेगी, और वे अतिरिक्त प्रतियों की मांग करेंगे ।**
- **तब आप यहां जोधपुर ०२९१-३२२०९ पर टेलीफोन कर और प्रतियां मंगा सकते हैं ।**

- कम से कम आप ५० या १०० प्रतियां मंगाइये, हम आपको २५ प्रतिशत कमीशन देंगे, इससे १० प्रतिशत कमीशन आपको बच जायेगा।
- हमने इन बुक स्टालों को भी पत्र लिखे हैं, और भारत की विभिन्न पत्रिकाओं में विज्ञापन भी दिये हैं।

उदाहरण—

* आपने जनवरी विशेषांक ९३ की १०० प्रतियां मंगाई, एक अंक का मूल्य है–१५)रु० इस प्रकार १०० प्रतियों का मूल्य हुआ १५००)रुपये।

** २५ प्रतिशत के हिसाब से कमीशन हुआ ३७५)रुपये।

*** इस प्रकार हम उपरोक्त १०० प्रतियां आपको मात्र ११२५)रुपये की वी.पी. से ही भेज देंगे और आपको प्राप्त होंगे १५००)रुपये।

**** आप इन बुक स्टाल वालों को जो कमीशन देना चाहें, दें।

परिवार की बात

और घर में परिवार की बात यह है कि आपको यह कार्य करना ही है, यह बीड़ा उठाना ही है, बुक स्टाल वालों से बात करने में शर्म क्या है? यदि इन बुक स्टाल वालों के माध्यम से ही आपके शहर में अपने परिवार का विस्तार होता है तो इस सबका श्रेय आपको ही तो होगा।

और यह गुरु आज्ञा से आपको काम अपने हाथ में लेना ही है।

आप निम्न प्रपत्र भर कर तुरन्त लौटती डाक से हमें भेज दें।

--------------------यहां से काटिये--------------------

पत्रिका सदस्यता संख्या ....

कृपया मुझे पचास/सौ प्रतियां जनवरी ९३ विशेषांक की २५ प्रतिशत कमीशन देकर वी०पी० से भेज दें मैं वी०पी– छुड़ा दूंगा, डाक व्यय आप स्वयं वहन करें।

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

यह तो ईश्वर का वरदान है
इस धरती पर
श्वेतार्क गणपति

मूर्ति का जब निर्माण किया जाता है तो उसमें मनुष्य के हाथों द्वारा अर्थात् कारीगर द्वारा कुछ न कुछ चोट तो अवश्य ही पहुंचाई जाती है, तभी तो वह मूर्ति बन सकती है, इसी प्रकार चित्र बनाते समय भी व्यक्ति को कई प्रकार के रंग जो कि विभिन्न रसायनों से बने होते हैं, कागज जो कि बड़े ही विचित्र पदार्थों के मेल मे बनता है, और जब तक इस प्रकार की वस्तुओं का शुद्धीकरण एवं प्राणप्रतिष्ठा नहीं की जाती तब तक वास्तविक रूप में इनका कोई अर्थ ही नहीं है। क्योंकि फिर तो इस मूर्ति में और किसी अन्य सामान्य मूर्ति में क्या अन्तर है ?

इसके विपरीत जब प्रकृति अर्थात् ईश्वर स्वयं एक प्रतिमा का निर्माण करता है तो फिर उसमें किसी प्रकार की अशुद्धि अथवा दोष रहने की आवश्यकता ही नहीं है। हां, क्योंकि इस प्रकार की मूर्ति ने धरती को स्पर्श किया या कुछ अच्छे बुरे खाद्य अखाद्य पदार्थ इसकी जड़ों में पहुंचे थे इस कारण इसे शुद्ध कर प्राणप्रतिष्ठा करनी आवश्यक है। यह श्वेतार्क गणपति जिसका नाम सफेद आक के कारण पड़ा, उसकी जड़ों में विद्यमान होता है और इसे निकाल कर देखते ही मन में एक अद्भुत भावना जागृत होती है।

श्वेतार्क गणपति के कई प्रयोग हैं लेकिन इस अंक में केवल एक विशेष प्रयोग दिया जा रहा है और वह है— लक्ष्मी सिद्धि का ऋणहर्ता प्रयोग, क्योंकि जिसके घर में श्वेतार्क गणपति का पूजन होता है वहां लक्ष्मी को आना ही पड़ता है और जब लक्ष्मी आती है तो ऋण का जाना ही पड़ता है, इसके साथ ही साधक को विभिन्न स्रोतों से धन लाभ होता है।

श्वेतार्क गणपति स्थापना

जिस दिन साधक को श्वेतार्क गणपति प्राप्त हो वह उसे अपने दोनों हाथों में लेकर इसे पूजा स्थान में एक पात्र में रख दें और उसे एक कपड़ा ओढ़ा दें और ध्यान रहे कि उसे केवल पूजा करने वाला अर्थात् साधना करने वाला साधक ही हाथ लगावें, अन्य कोई नहीं।

साधना विधान

किसी भी बुधवार को इसकी स्थापना एवं पूजा अनुष्ठान करना है, इस कारण बुधवार को प्रातः साधक जल्दी ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर नित्य कर्म से निवृत्त होकर अपने पूजा स्थान में बैठ कर एक ताम्र पात्र में स्वस्तिक

का चिह्न बना कर श्वेतार्क गणपति को स्थापित करें, तत्पश्चात् देव मूर्ति के समान ही शुद्ध गंगा जल से इसे स्नान करावें और इन्हें पुष्प के आसन पर विराजमान कर लाल चन्दन, हल्दी, सिन्दूर, अक्षत, धूप, शुद्ध घी के दीपक इत्यादि से पूजन करें, इसके पूजन का सम्पूर्ण विधान इस प्रकार है -पहले विनियोग फिर ध्यान तत्पश्चात् विशेष महामन्त्र जप ।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीऋणहरणकर्ता श्वेतार्क गणपति स्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषि: अनुष्टुप्छन्द: । श्री ऋणहर्ता श्वेतार्क गणपति देवता ग्लौं बीजम् । ग: शक्ति: । गों कीलकम् । मम सकल ऋणनाशने जपे विनियोग: ॥

अब साधक को अपने हाथ में पीले चावल लेकर हाथों को अंजलि मुद्रा में रखते हुए श्वेतार्क गणपति ऋण नाश एवं लक्ष्मी प्राप्ति का ध्यान एवं स्तोत्र का पाठ करना है और पूर्ण शान्त मन से केवल आपके नेत्रों के सामने गणपति ही हों और आप जद में खो जाएं ऐसी भावना से यह स्तुति करनी है, इसका नित्य एक पाठ करने से तीव्र से तीव्र दारिद्रय का नाश हो जाता है और एकाग्र-चित्त होकर एक वर्ष तक नित्य पाठ करने से पूर्ण दारुण दारिद्रय से मुक्त होकर साधक कुबेर के समान धनपति हो जाता है ।

ऋणहर्ता गणपति स्तोत्र

ॐ सिंदूरवर्ण द्विभुजं गणेश लंबोदरं पद्मदले निविष्टम्
ब्रह्मादिदेवै: परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्

सृष्ट्यादौब्रह्मणा सम्यक् पूजित: फलसिद्धये ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चित: ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
हिरण्यकश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चित: ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
महिषस्य वधे देव्या गणनाथ: प्रपूजित: ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजित: ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
भास्करेण गणेशो हि पूजितच्छविसिद्धये ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
शशिना कान्तिवृद्धयर्थं पूजितो गणनायक: ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजित: ।
सदैव पार्वती पुत्र: ऋण नाशं करोतु मे ॥
इदं ऋणहर स्तोत्र तीव्र दारिद्रयनाशनम् ।
एक वारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहित: ॥
दारिद्रयं दारुणं त्यक्त्वा कुबेर समतां ब्रजेत् ॥

इस स्तोत्र का पाठ करने के पश्चात् साधक अपने हाथ में अथवा थाली में रख कर घी का दीपक लें और इस दीपक को श्वेतार्क गणपति के सामने रख कर निम्न मन्त्र का जप करें । यह मन्त्र अत्यन्त ही प्रभावशाली एवं तन्त्र सिद्ध मन्त्र है तथा इसे ११ या २१ माला जप करें—

मन्त्र

॥ ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नम: फट् ॥

कुछ ग्रन्थों के अनुसार साधक को इस विशेष मन्त्र का जप 'हल्दी की माला' से करना चाहिए, तभी यह पूर्ण प्रभावशाली रहता है, पूर्ण अनुष्ठान तो एक लाख मन्त्र जप का है, इतना निश्चित है कि यदि साधक इसका नियमित रूप से पाठ करें तो इच्छनुसार फल प्राप्त होता है और जीवन में उन्नति ही उन्नति आती है ।

श्वेतार्क गणपति के लक्ष्मी सम्बन्धी, वशीकरण सम्बन्धी, शक्ति सम्बन्धी, कार्य सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी गृह प्रवेश सम्बन्धी, नवग्रह शान्ति सम्बन्धी, तांत्रिक प्रयोग शान्ति सम्बन्धी भी विशेष प्रयोग हैं, जिनके बारे में आगे विस्तार से लिखा जायेगा । ●

ऐसा भी होता है
जहां एकाक्षी नारियल
वहां
लक्ष्मी और विष्णु साक्षात् विराजमान

नारियल को श्रीफल और पूजनीय माना गया है। प्रत्येक पूजा चाहे छोटी हो या बड़ी, नारियल का प्रयोग अवश्य ही किया जाता है इसकी स्थापना की जाती है, और हर पूजन में इसका विधिवत पूजन होता है, क्योंकि लक्ष्मी के इस स्वरूप के बिना पूजा अधूरी ही है। इसकी पवित्रता इतनी अधिक मानी गई है कि आज भी जब लड़के लड़की का सम्बन्ध होता है तो वधु पक्ष द्वारा वर पक्ष को नारियल तथा मात्र एक रुपया भेंट किया जाता है और बात को पक्का समझा जाता है, क्योंकि यह समझा ही जाता है कि यदि सामने वाले पक्ष ने आपसे नारियल ले लिया है तो वह वचन से बंध गया है और उस वचन को तोड़ने की स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता।

शिष्य जब अपने गुरु की पूजा करता है तो वह गुरु चरणों में नारियल का पूजन कर भेंट रखता है, और इस प्रकार वह अपने आपको समर्पित कर देता है। दीवाली पूजन हो अथवा कोई यज्ञ, नारियल की महिमा तो निराली ही है। यज्ञ में पूर्णाहुति नारियल के साथ की जाती है, और इसके पीछे यह भाव रहता है कि हे देव हमने अपनी पूर्ण श्रद्धा और भक्ति से जो अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वह आपको समर्पित है, इस नारियल के माध्यम से मैं आपसे प्रार्थना करता हूं क्योंकि इसमें आपका स्वरूप है।

एकाक्षी नारियल

नारियल की जटा को ऊपर से हटा कर देखने पर दो गोल चिह्न और एक लम्बा सा नाक के आकार का चिह्न दिखाई देता है। प्रायः सभी नारियल में यही आकार बना होता है, हजारों लाखों नारियलों में किसी किसी में केवल एक गोल चिह्न बना होता है इस केवल एक गोल चिह्न वाले नारियल को ही 'एकाक्षी नारियल' कहा जाता है।

हर प्रकार की पूजा में इसका विशेष महत्व है और इसे साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। ऐसी मान्यता ही नहीं, विश्वास भी है कि जिस घर में इस विशिष्ट लक्ष्मी स्वरूप नारियल की स्थापना होती है वह घर धन-धान्य, आर्थिक सम्पत्ति तथा लक्ष्मी की कृपा से पूर्ण रहता है, उस घर पर कभी कोई संकट आ ही नहीं सकता।

सेठ हीरा लाल साहू आज आसाम के तीन टी बागानों और कई अन्य कम्पनियों के मालिक हैं, आज उनकी अवस्था कम से कम ५५ वर्ष के आस पास अवश्य होगी। आज से २५ वर्ष पहले वे राजस्थान में जिस स्थान पर रहते थे और छोटा मोटा व्यापार चलाते थे उस व्यापार में सट्टे के कारण बहुत बड़ा घाटा हो गया, जहां घर में आठ दस नौकर थे, कारें थीं, वहां कुछ भी नहीं बचा, एकदम सड़क पर आ गये।

किसी ने उन्हें राय दी कि तुम जोधपुर जाकर श्रीमाली जी से मिलो, वे तुम्हारी समस्या का कुछ न कुछ समाधान अवश्य ही करेंगे। वे आये और पूज्य गुरुदेव के युवा स्वरूप को देख कर उनके मन में इधर-उधर का विचार भी आया लेकिन सोचा अब आ ही गये हैं तो मिल लेते हैं। पूज्य गुरुदेव ने उनके मन को समझते हुए सुबह से शाम तक मिलने को बुलाया ही नहीं, आखिर दूसरे दिन सुबह जब उन्हें बुलाया तो वे फूटफूटकर रो पड़े, और बोले कि आपकी अनोखी माया का ज्ञान तो रात को ही मुझे हुआ, जब लेटा था तो अचानक जैसे आवाज आई कि तू मूर्ख है, रेगिस्तान में भटक रहा है, और जब सरोवर तेरे सामने है जिसका जल प्राप्त कर तू अपने पूर्व जन्म तथा इस जन्म का क्या, अगले सात जन्मों की प्यास बुझा सकता है। तू कल्पवृक्ष के नीचे खड़ा होकर भी भिखारी का भिखारी ही रहना चाहता है। पूज्य गुरुदेव बोले तो कुछ नहीं, केवल इतना कहा कि हीरालाल जी आपके व्यापार में घाटा आपकी मूर्खता के कारण हुआ है। आपके जो पूर्व जन्म के तथा इस जन्म के थोड़े बहुत पुण्य थे वे आपको इतनी ऊंचाई तक उठा तो दिया लेकिन ये पुण्य अब समाप्त हो गये हैं, और अब आपका उद्धार सम्भव नहीं है। लेकिन यदि तुम्हें जीवन में वापस कुछ बनना है तो तुम अपना घर छोड़ दो, और व्यापार तो तुम्हारे रक्त में है कामरूप देश आसाम जाकर व्यापार करो। नित्य प्रति लक्ष्मी एवं विष्णु की पूजा अराधना करते रहो, आज से ठीक १५ महीने बाद एक विशेष घटना घटेगी और उसी दिन से तुम्हारा भाग्योदय होगा, याद रखना जीवन में कोई भी अतिथि आ जाए तो उसका स्वागत करना, साधु-सन्यासियों में श्रद्धा रखना।

आगे क्या हुआ कि हीरालाल जी ने वहां जाने के बाद व्यापार शुरू किया, धीरे-धीरे थोड़ा कार्य जमने लगा, लेकिन आमदनी इतनी ही थी कि बस गुजर बसर हो जाता था। पत्नी, बच्चे गांव से बुला कर रखने तक की व्यवस्था नहीं। एक दिन वे अपनी दुकान बन्द कर रहे थे कि शाम के हल्के अंधेरे में एक संन्यासी लम्बे बाल व दाढ़ी, गेरुआ वस्त्र धारण किये और गेरुआ झोला लिये हुए। उसने कहा, सेठ! पूजा के लिए कुछ तिल चाहिए। बनिया महाजन ने कहा भाई कितने पैसे का दूं, संन्यासी ने कहा—पैसे वैसे कुछ नहीं है, तिल देता है तो दे, नहीं तो तेरी इच्छा। सेठ का मन तिल देने का नहीं था, लेकिन उसी समय गुरुदेव की कही हुई बात याद आयी कि किसी साधु-संन्यासी को निराश मत करना, ऐसा ही सोचते हुए उन्होंने चार-पांच मुट्ठी तिल दे दिये और कहा —महाराज! पधारो, संन्यासी ने कहा, सेठ! ये ले तिल का दाम, ऐसा कह कर उसने अपने झोले में से एक छिला हुआ नारियल निकाल कर दे दिया और कहा कि इसकी पूजा रोज करना, तेरा कल्याण होगा। सेठ ने कहा ठीक है भाई और नारियल को वहीं दूकान में रख कर घर चले गये, दूसरे दिन आकर सामान ठीक कर रहे थे तो वह नारियल भी दिखा, उसे उठा कर देखा तो वह कुछ छोटा और अजीब लगा, उस पर सामान्य नारियल के समान चिह्न भी नहीं थे, केवल एक काला निशान बना हुआ था। स्वभाव और श्रद्धा से हिन्दू होने के कारण नारियल को उठा कर गद्दी के पीछे बने पूजा के स्थान पर रख दिया, अगरबत्ती रोज जलाते ही थे, तो अपने पूजा स्थान में अगरबत्ती जला दी और लक्ष्मी मैया की जय बोलते हुए अपनी दुकानदारी उस दिन शुरू की।

उस दिन पता नहीं क्या हुआ, वे भी समझ नहीं पाये बिक्री चार गुना बढ़ गई, उन्होंने सोचा क्या बात है? बाजार में दुकानें तो बहुत हैं और जो ग्राहक कभी मेरी दुकान पर आते ही नहीं थे, वे भी आ गये। दो-तीन

महीने में ऐसी स्थिति हो गई कि उन्हें अपने बाजू वाली दुकान भी खरीदनी पड़ी, एक-दो नौकर रखने पड़े। धीरे-धीरे व्यापार में उन्नति के एक बाद एक जो अवसर आये।

एक बार हीरालाल जी अपनी दुकान में गद्दी पर बैठे ही थे कि एक साधु आकर सामने खड़ा हो गया और कुछ बोला नहीं खड़ा ही रहा, तब सेठजी ने पूछा कि महाराज क्या चाहिए? उन्होंने सोचा कि इसको रुपये आठ आने चाहिए सो गल्ले में हाथ डाल कर एक रुपये देने लगे तो उसने कहा कि मुझे पैसा नहीं चाहिए, तेरी गद्दी के ऊपर लक्ष्मी जी की तस्वीर के साथ जो नारियल पड़ा है वह दे दे। सेठजी ने पूछा कि ऐसी क्या बात है जो तुम मेरी पूजा का नारियल ही मांग रहे हो, तो वह तांत्रिक बोला कि मैं कुछ विशेष तन्त्र साधनाओं में पूर्णता के लिए वह एकाक्षी नारियल चाहता हूं, सेठजी ने कहा कि ऐसी क्या विशेषता है इसमें, तो तांत्रिक ने कुछ जवाब नहीं दिया शाम को फिर आया, इस प्रकार रोज चक्कर काटे और कहे कि ये नारियल मुझे दे दें, सेठजी को लगा कि इसमें जरूर कुछ विशेष बात है, तो नारियल को उठा कर अपनी तिजोरी में रख दिया, उस दिन तो उन्हें दस नये आर्डर मिले, अगली बार जब तांत्रिक आया तो सेठजी ने कहा कि महाराज जी ऐसी क्या बात है कि आप मेरे पीछे पड़े हो, नारियल तो मैं आपको देने का विचार कर सकता हूं, लेकिन आप मुझे बताइये तो सही कि आखिर ये चीज क्या है? तो उसने जबाब दिया कि ये सब तेरा वैभव दुकानदारी इस **'एकाक्षी नारियल'** का ही चमत्कार है, और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि जिस दिन से यह तुझे प्राप्त हुआ है उसी दिन से तेरी उन्नति प्रारम्भ हुई है।

सेठजी ने मन ही मन विचार किया कि इसकी बात तो सही है। आगे तांत्रिक ने कहा कि— यह कोई तेरे पूर्व जन्मों का फल है जो तुझे ऐसा लक्ष्मी का श्रेष्ठ वरदान स्वरूप एकाक्षी नारियल प्राप्त हुआ है। मुझे न दे तो कोई बात नहीं लेकिन इसे अपने से जुदा मत करना। और सेठजी ने इसे उठा कर अपने घर में सात तालों के भीतर तिजोरी में ही ले जाकर रख दिया और वहीं जाकर नित्य पूजन अवश्य करते।

ऐसे एक-दो नही सैकड़ों उदाहरण हैं कि एकाक्षी नारियल की स्थापना से वे दरिद्र से दानवीर बन गये, रंक से राजा बन गये।

महिमा अनेक

लक्ष्मी के इस वरदान की महिमा अनन्त है। तन्त्र के जानकार और तांत्रिक इसे शिव का तीसरा नेत्र मानते हैं, वे इसको सिद्ध कर लेते हैं और पूजन पर अथवा विशेष तांत्रिक अनुष्ठान पर बैठते समय इस 'एकाक्षी' में झांक कर इस बात को देख लिया करते हैं कि कौन उनके पास आ रहा है, आस पास क्या हो रहा है?

पूजन

इस 'एकाक्षी नारियल' का पूजन विधान तो अत्यन्त ही सरल है जिस प्रकार नित्य प्रति लक्ष्मी चित्र की पूजा करते हैं और उनका ध्यान करते हैं, उसी प्रकार इसे लक्ष्मी विष्णु का स्वरूप मानते हुए पूजन करें और इसे अपने पूजा स्थान में अथवा घर में जहां धन-सम्पत्ति रखते हैं वहां इसे स्थापित रखें।

पूज्य गुरुदेव की कृपा हुई तो उनके संन्यासी मित्रों से जो विशेष सामग्री समय-समय पर प्राप्त होती रहती है। उनके द्वारा एकाक्षी नारियल प्राप्त होगा तो पत्रिका सदस्यों को पहले प्रदान किया जायेगा। आप पत्र भेज कर इस सम्बन्ध में नियमित जानकारी प्राप्त करते रहें। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना नाम	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
महामृत्युंजय विधान	७	त्र्यम्बक पूजा यन्त्र	१५०)रु०
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महासाधना	६	षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना पैकेट	४००)रु०
विष्णु अपराजिता महाविद्या साधना	१७	विष्णु अपराजिता महायन्त्र	१७०)रु०
		विष्णु महाविद्या माला	१२०)रु०
पांच साधनाएं—	२१	—	—
१-तारा साधना	२२	तारा यन्त्र चित्र	१५०)रु०
		तारा वत्सनाभ	६०)रु०
२-बगलामुखी साधना	२३	बगलामुखी यन्त्र चित्र	२४०)रु०
		हरिद्रा हंसराज	४५)रु०
		हल्दी की माला	२४०)रु०
३-भूत साधना	२४	भूत डामर यन्त्र	१२०)रु०
		बड़हल का टुकड़ा	२४)रु०
		मूंगा की माला	६०)रु०
४-वशीकरण साधना	२५	वशीकरण ताबीज	१७७)रु०
		रतनजोत	५१)रु०
		स्फटिक माला	६०)रु०
५-उर्वशी साधना	२३	उर्वशी यन्त्र	२१०)रु०
		सोनवल्ली	७०)रु०
ग्रहण काल के विशेष प्रयोग	२६	ग्रहण तांत्रोक्त हत्थाजोड़ी	३००)रु०
		कमलगट्टा माला	६०)रु०
		ग्रहण तांत्रोक्त महामाया चक्र	१५०)रु०
		ग्रहण तांत्रोक्त सियारसिंगी	१५०)रु०
श्वेतार्क गणपति प्रयोग	३५	श्वेतार्क गणपति	३५१)रु०
		हल्दी की माला	२४०)रु०

महत्वपूर्ण एवं आवश्यक जानकारी

दीक्षा

शिष्य के जीवन का वह दिन एक जन्म दिवस होता है जब वह परम पूज्य गुरुदेव से उनके चरण कमलों में बैठ कर दीक्षा प्राप्त करता है, और उस दीक्षा में गुरुदेव की शक्ति और चेतना का प्रभाव शिष्य के भीतर होता है, वह दीक्षा वास्तविक दीक्षा है।

पत्रिका कार्यालय को ऐसी सूचनाएं प्राप्त हुई हैं, कि परम पूज्य गुरुदेव के नाम से कुछ व्यक्ति दीक्षा देने का कार्यक्रम स्थान-स्थान पर सम्पन्न करते हैं। यह कृत्य अत्यन्त निन्दनीय एवं साधक के साथ धोखा है। दीक्षा देने का अधिकार केवल गुरुदेव का ही है और उनसे दीक्षा प्राप्त किया हुआ साधक ही उनका शिष्य कहलाने का अधिकारी है। दीक्षा न तो पूज्य गुरुदेव का कोई शिष्य दे सकता है और न ही उनके परिवार का कोई सदस्य और न ही कोई अन्य व्यक्ति। यह कार्य केवल सद्गुरुदेव द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है तभी सही अर्थों में दीक्षा होती है।

अनुष्ठान

ऐसी भी सूचनाएं प्राप्त हुई हैं कि कई स्थानों पर पूज्य गुरुदेव के नाम से कुछ स्वार्थी व्यक्ति अनुष्ठान कार्य सम्पन्न कराते हैं और साधकों से पैसे लेते हैं। पूज्य गुरुदेव ने पूरे भारतवर्ष में किसी भी शिष्य को अनुष्ठान वह चाहे सौ रुपये का हो अथवा लाख रुपयों का, अधिकृत नहीं किया है।

ऐसे अनुष्ठान से जो कि गुरुदेव के नाम से यदि किसी व्यक्ति द्वारा सम्पन्न कराया जाता है तो हानि होने की पूर्ण सम्भावना है, अतः इसके लिए वह साधक ही उत्तर-दायी होगा।

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७

सद्गुरुदेव तेरी माया अपार है

यद्यपि मैंने अभी दीक्षा ग्रहण नहीं की है पर पत्रिका में दी गई विधि अनुसार अपने बच्चों को 'सरस्वती यन्त्र' धारण कराया, जिसके परिणाम स्वरूप तीनों बच्चों ने परीक्षा में उच्च श्रेणी में सफलता प्राप्त की।

—श्रीमती आशा चौरे कुक्षी, जिला-धार

मेरे घर पर तन्त्र प्रयोग था, अशान्ति, कलह एवं बीमारी बनी रहती थी, आपके निर्देशानुसार भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की, अब घर परिवार में सब कुछ ठीक है।

—जी. रामा प्रसाद, हैदराबाद

एक रात्रि मेरी भतीजी चन्दा को भयंकर विषधर सर्प ने काटा, सारा शरीर नीला पड़ने लगा, तब मैंने उसी समय स्नान कर पत्रिका में दिये अमोघ बीज मन्त्र का १०८ बार जप किया, ऐसा लगा कि शक्ति की एक दिव्य किरण चन्दा के चारों ओर घूमने लगी और बच्ची दो घण्टे में बिलकुल स्वस्थ हो गई। गुरुदेव ! आपने इस बच्ची को नया जीवन दिया है।

सुरेश तिवारी, पथरगामा (गोंडा)

गुरुदेव ! जब से आपने मुझे 'इष्ट प्राकाम्य' दिया है तब से मेरी दिनचर्या, विचार बिलकुल बदल गये हैं, आत्म शक्ति, इच्छा-शक्ति का पूर्ण विकास हो रहा है।

— शेखर वर्मा, जयपुर

जबसे हमने अपने घर में आपका दिया 'श्रीयन्त्र' स्थापित किया है निरन्तर फायदा हो रहा है, यह सब आपकी कृपा है।

प्रदीप कुमार पंसारी, नरसिंहपुर

जनवरी ९२ में डॉक्टर द्वारा आंखों में गलत दवाई देने के कारण रिएक्शन हो गया था, आंख व सिर में भयंकर पीड़ा रहती थी इसके बाद आपसे दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन से आंख एवं सिरदर्द की पीड़ा समाप्त होनी प्रारम्भ ही हो गई, अब मैं परीक्षा में बैठी हूं।

—कु० ज्योति स्वरूप, जबलपुर

कार्य सिद्धि हेतु मैंने पत्रिका में लिखी 'कमल वासिन्यै लक्ष्मी' की साधना सम्पन्न की, और २१ दिन में मेरी धन सम्बन्धी कार्य बाधा दूर हो गई है, अब आगे क्या साधना करूं ?

— मन्नालाल वास्कले, खरगौन